Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

3rd August 2017

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

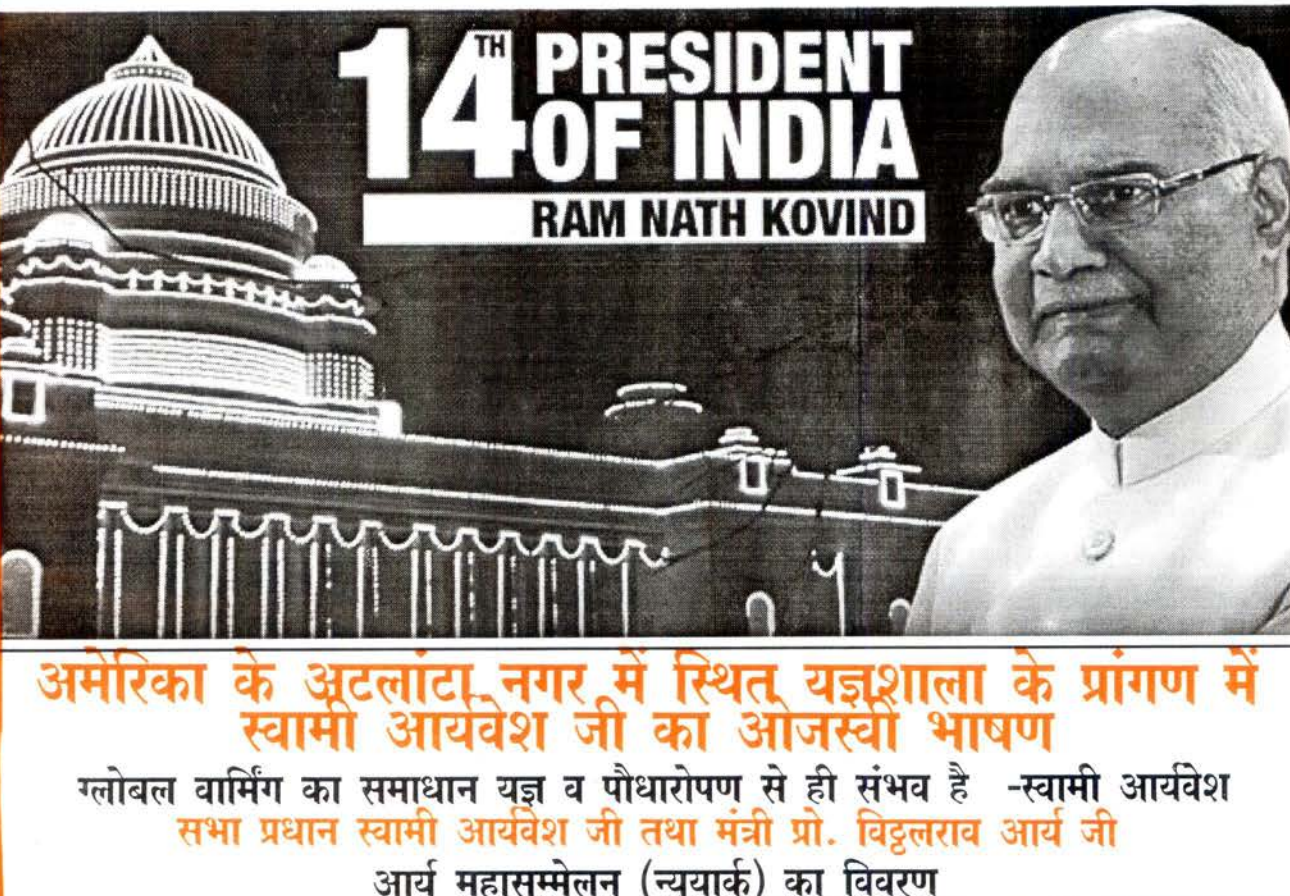

अमेरिका के अटलांटा नगर में स्थित यज्ञशाला के प्रांगण में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी भाषण

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान यज्ञ व पौधारोपण से ही संभव है -स्वामी आर्यवेश

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी

आर्य महासम्मेलन (न्यूयार्क) का विवरण

२५.७.२०१७ को विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अमेरिका के प्रसिद्ध शहर अटलांटा में पौधारोपण किया। स्वामी आर्यवेश जी अमेरिका में २७ जुलाई से ३० जुलाई तक अमेरिका के न्यूयह्र्क में आयोजित २७ वें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लिया। स्वामी जी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। स्वामी आर्यवेश जी के साथ भारत से सार्वदेशिक सभा

के महामंत्री प्रो. विट्ठल राव आर्य (हैदराबाद), सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री विरजानंद एडवोकेट (राजस्थान) कोषध्यक्ष प्रो. श्योताज सिंह (गुरुग्राम), गुरुकुल गौतम नगर के कुलपति स्वामी प्रणवानंद सरस्वती व वैदिक मिशन मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री का प्रतिनिधि मंडल अमेरिका में शामिल हुआ। आज उन्होंने अटलांटा स्थित यज्ञशाला में पंडित खगेन्द्र नाथ गिरी के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया। वे जहाँ जाते हैं एक पेड़ अवश्य लगाते हैं। इसी कड़ी में उन्होंने यहां भी

पेड़ लगाया। पंडित खगेन्द्र नाथ गिरी के सुपुत्र सुदीप की स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की शुरुवात यज्ञ से हुई। इस अवसर पर पंडित भूपेंद्र तिवारी, श्रीमती प्रतिभा व सुवीर कुमार ने भी सहयोग किया। इस अवसर पर सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

अलबामा राज्य के मंटगोमरी में स्वामी आर्यवेश जी सहित पूरे प्रतिनिधि

अलबामा राज्य के मंटगोमरी में स्वामी जी सहित पूरे भारतीय दल का विशेष स्वागत अटलांटा से लगभग ३५० किलोमीटर दूर मंटगोमरी के हिन्दू मंदिर में विशेष स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विपिन कुमार व मंजू कुमार ने किया। धर्म का वास्तविक स्वरूप विषय पर स्वामी आर्यवेश जी का प्रवचन भी हुआ।।

वैदिक टैम्पल अटलांटा में वैदिक सत्संग

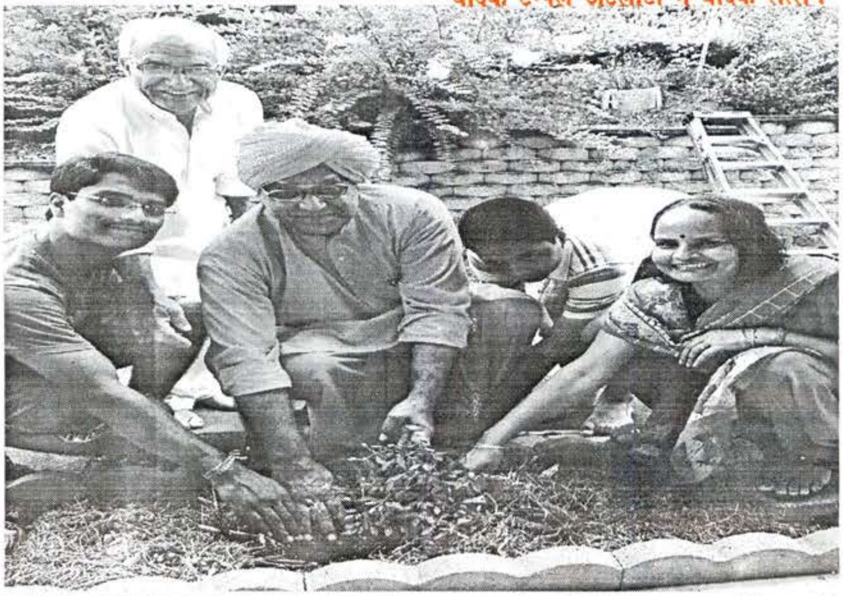

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान विश्रुत आर्य के संयोजन में वैदिक टैम्पल अटलांटा में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय स्तर पर आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने भाग लिया जिनको स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक विचारधारा के प्रचार व प्रसार को कैसे तेज करना चाहिए विषय पर अपने विचार सांझा किये।

२७ जुलाई से २७वां अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन शुरू हुआ।।

अमेरिका में आर्य समाज की प्रथम इकाई स्थापित करने वाले आर्य नेता धर्मजित जिज्ञासु की स्मृति में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन अमेरिका के प्रसिद्ध शहर न्यूयार्क के द्रोपदी जिज्ञासु आश्रम में किया गया। जिसमे भारत के अतिरिक्त भी कई स्थानों से आर्य नेता व विद्वानों ने भाग लिया।

सत्य का महत्व

- नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। सत्य का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है इसीलिए क्रान्तिदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज के पहले पांच नियमों में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए सत्य शब्द का प्रयोग किया है। चौथे नियम में तो स्पष्ट निर्देश दिया है कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" महर्षि दयानन्द ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है "जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है व्यवहारभानु में देव दयानन्द मनुष्य के जीवन में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए लिखते हैं "सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।"

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए वेद भगवान भी "ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्तिः" ऋ.४/२३/८ अर्थात् सत्य का आचरण पापों को नष्ट कर देता है। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो सत्य का आचरण मनुष्य को पापों से दूर कर देता है। झूठे अंधेरों की चट्टानें कितनी मजबूत क्यों ना हों सत्य के सूर्य के उदय होने के आभास मात्र से टूट कर खत्म हो जाती है। सत्य के सामने झूठ कभी नहीं टिक सकता और अंत में सदा सत्य की विजय होती है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है **"सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्।"** अर्थात् सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। मनुष्य की हर मनोकामना सत्य से ही पूरी होती है। सत्य का मार्ग चाहे जितना भी कांटो से भरा कष्ट से परिपूर्ण क्यों ना हो लेकिन सत्य के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। सत्य से ही धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की प्राप्ति होती है अतः मनुष्य को कभी किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य वह दिव्य दीपक है जो मनुष्य के आन्तरिक तम अविद्या को नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है समाज के लोग सदा उसकी बातों पर विश्वास करते हैं। सत्यवादी के साथ लोग निःशंक और निश्चित होकर व्यवहार करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सत्यवादी व्यक्ति हमें धोखा नहीं देगा। इससे समाज के लोगों को सुख मिलता है। सत्यवादी सदा निर्भीक और चिन्तामुक्त होकर आनन्द से जीता है उसे कभी किसी से डर नहीं लगता। सत्यवादी को अपने हर कार्य के लिए परिवार समाज के लोगों का समर्थन मिलता है और समाज का समर्थन मिलने से उसका उत्साह बढ़ता है और वह सदा प्रसन्न रहता है। सत्य बोलने वालों की समाज की प्रतिष्ठा बढ़ती है और पूर्ण सत्यवादियों का यश युगों तक बना रहता है। सत्य बोलने वाले को कभी किसी के सामने बोलने में डर नहीं लगता और उसे कभी मानसिक तनाव नहीं होता अच्छी निश्चित नींद आती है। शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ रहते हैं। सत्यवादी सदा प्रसन्न, रोगमुक्त निश्चित रहता है। सत्यवादी की सभी योजनाएं पूरी होती हैं क्योंकि उसे अपनी सभी योजनाओं के लिए जब परिवार समाज का सहयोग मिलता है क्योंकि जनता को उसके सत्य आचरण के कारण पूरा विश्वास होता है कि सत्यवादी उनके सहयोग का सदा सदुपयोग ही करेगा। इसलिए सत्यवादी का भविष्य सदा उज्जवल होता है। सत्य बोलने से परिवार समाज और राष्ट्र में परस्पर विश्वास और प्रेम का वातावरण बनता है जिससे सभी को सुख मिलता है।

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए ही वेद भगवान ने मनुष्य मात्र को आदेश दिया **'वाचः सत्यमशीय।'** अर्थात् मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूं। इससे आगे बढ़कर सत्य के साथ माधुर्य को धारण करने का निर्देश देते हुए कहा गया **सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयान ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।** मनुस्मृति अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय भाषा में बोलो, सत्य को कटु भाषा में मत बोलो। क्योंकि मनुष्य का शरीर आत्मा का मंदिर, सर्व अन्तर्यामी परमात्मा का निवास है अतएव इसे सदा सत्य आचरण से स्वच्छ रखें और कभी झूठ बोलकर गंदा ना करें। सरलता को रथ और सत्य को शस्त्र बनाकर जीवन के संग्राम में कूद पड़ो क्योंकि **'सत्यमेव जयते नानृतम्'** सदा सत्य की ही विजय होती है असत्य की नहीं। इसीलिए मनुष्य के लिए यही श्रेयस्कर है कि वह जीवन में सदा सत्य व्रतों को धारण करें।

◆◆◆

निर्भीक सन्यासी स्वामी दयानंद सरस्वती

सत्य का प्रकाश मेरा धर्म है

भादों द्वादशी, संवत् १९३६ को स्वामी जी बरेली पहुँचकर लाला लक्ष्मीनारायण की कोठी में ठहर गए। उनके प्रवचनों में सामान्य जनों के अतिरिक्त उच्च सरकारी अधिकारी भी भाग लेते थे। एक दिन प्रवचन में स्वामी जी ने ईसाई धर्म के सम्बन्ध में कहा- "ये लोग कुमारी से पुत्र होना बताते हैं और उसके लिए परमात्मा को दोषी ठहराते हैं।"

इससे सभा में उपस्थित कमिश्नर साहब क्रोधित हो गए और लक्ष्मीनारायण जी को बुलाकर कहा- "अपने पण्डित को समझाइए। वे अपने व्याख्यानों में कठोरता न बरतें। हम लोग तो शिक्षित हैं। हिन्दू और मुसलमान भड़क गए तो स्वामी को भारी पड़ जाएगा।"

लक्ष्मीनारायण जी ने साहस करके यह सूचना स्वामी जी को दी। अगले दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया- "कुछ सज्जन मुझे कहते हैं कि सत्य न कहें। ऐसा करने से कलैक्टर साहब और कमिश्नर साहब रुष्ट हो जाएँगे।" स्वामी जी ने गरजते हुए कहा- "चक्रवर्ती राजा भी चाहे कुपित क्यों न हो जाय, परन्तु दयानन्द सत्य का प्रकाश करने से नहीं रुक सकता।" उन्होंने आगे कहा- "दयानन्द के शरीर को नष्ट किया जा सकता है, परन्तु दयानन्द की आत्मा को छिन्न-भिन्न करना किसी के वश की बात नहीं है। अपने शरीर की रक्षार्थ दयानन्द सत्य के रास्ते से नहीं हट सकता।"

सत्य कहने में कोई भय नहीं

स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्भीक संन्यासी थे। अपनी बात को सरल-सपाट शब्दों में कहने से वे कभी नहीं चूकते थे। सभी जानते थे कि स्वामी जी किसी भी मत की उन बातों का खण्डन करते हैं जो अतार्किक, अव्यावहारिक और वेद-विरुद्ध हों।

स्वामी जी की प्रवचन-सभा चल रही थी। उसी मार्ग से डिप्टी कलैक्टर अलीजान जा रहे थे। वे भी स्वामी जी के प्रचार कार्य से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने अपनी सवारी रोकी और स्वामी जी से बोले- "अपने व्याख्यानों में आप बहुत कठोरता से काम लेते हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। सभाओं में आपको सँभल कर बोलना चाहिए।"

स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया- "हम असत्य कभी नहीं कहते। सत्य कहने में हमें कभी कोई भय नहीं है।

कलैक्टर अलीजान ने आगे कुछ नहीं कहा। अपने रास्ते चले गए।

वंचित, शोषित तथा उपेक्षित वर्ग को जोड़ने का संकल्प लेकर श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख-शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है

– स्वामी आर्यवेश

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 7 अगस्त, 2017 को रक्षा बन्धन तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 15 अगस्त, 2017 को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिएं जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गम्भीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य

समाज में आमन्त्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं।

एक सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपना कार्यों से चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मुहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षों को लगाने का भी आह्वान किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

15 अगस्त, 2017 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा भगवान श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे भगवान श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र "वैदिक सार्वदेशिक" के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। "वैदिक सार्वदेशिक" का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति क्यों और कैसे ?

- स्वामि आर्य वेशजी

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास, ते सं भ्रातरो वावृधुः सौभस्त्राय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र, षां सुदुना पृश्निः सुदिना मरुदृभ्यः ।। ऋ-५/६०/५)

अब से १९२ वर्ष पहले भारत माता की कोख से जन्मे एक महामानव ने ऋग्वेद के इस आदर्श के अनुरूप समाज व्यवस्था का एक सपना देखा था । इसके अनुसार कोई बड़ा नहीं होगा, कोई छोटा नहीं होंगे । जिनका पिता परमात्मा और माता प्रकृति होगी इस आदर्श को सामने रखकर उस महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज की सड़ी-गली व्यवस्था के विरुद्ध वगावत की एक आंधी खड़ी कर दी थी और सारी दुनिया के विचारशील लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था कि आर्य समाज के नाम से भारत में एक आग दिखाई पड़ती है जो दयानन्दजी के दिल में सुलग रही है और आर्य समाज की भट्टी में धधक रही है । **''अग्नि ना अग्निः समिध्यते''** अग्नि से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है । इस सिद्धान्त के अनुरूप महर्षि दयानन्द के हृदय में सुलगी आग के साथ भी यही हुआ और स्वीमी श्रद्धानन्द, शहीद लेखराम, लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण । वर्मा, राम प्रसाद बिस्मिल भगत सिंह आदि अनेक जवानियाँ जलती हुई मशालें बन उठीं और आज इस पवित्र ऋषि वेदी पर हमें यह कहते हुए, सगर्व है कि बलिदान, वीरता, संकल्पशीलता, परिश्रम, लगन व त्याग की आर्य परम्परा का गौरवशाली इतिहास हमारे पीछे है इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज की प्रारम्भिक आधी शताब्दी का इतिहास जितना वेदीप्यमान रहा अन्तिम अर्धशताब्दी का उतना नहीं रहा । हमने आन्दोलन और सृजन का ऋषि प्रदत्त कार्यक्रम विस्मृत करके आर्य समाज की महान नैतिक शक्ति को संस्थाओं के फेर में झोंक दिया । परिणाम स्वरूप आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है - अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना'' गौण हो गया तथा संस्थाओं का जंजाल मुख्य बन गया और आर्य समाज आम आदमी से दूर होता चला गया ।

दुनिया के इतिहास का यह वितित्र संयोग है कि विश्व के दो महापुरुष समकक्ष पैदा हुए कार्यक्षेत्र में उतरे और इस दुनिया से एक साथ दोनों का अवसान हुआ । यह दो महापुरुष थे महर्षि दयानन्द सरस्वती और कार्लमार्क्स । हम सब जानते हैं कि आज दुनिया की एक तिहाई आबादी कार्लमार्क्स के चिन्तन पर आधारित राजनैतिक दलों द्वारा शासित हैं । कार्लमार्क्स के अनुयायियों ने उस विचारधारा को फैलाने के लि, संत्रठित एवं व्यवस्थित प्रयास किया । किन्तु दूसरी तरफ आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज की शोषक उन्मूलक व्यवस्था के बदलाव और विकल्प की जो रूपरेखा हमें दी थी, हम उनके अनुयायी उस विचारधारा को विश्व में प्रचारित-प्रसारित करने एवं क्रियान्वित करने की दिशा में कोई बहुत संतोषजनक प्रगति नहीं कर सके । यद्यपि यह सत्य है कि पिछली शताब्दी में सामाजिक अन्याय, महिला उत्पीड़न तथा धार्मिक पाखण्ड आदि कुरीतियों के विरुद्ध जितना कार्य आर्य समाज ने किया है उतना किसी भी राजनैतिक, गैर राजनीतिक या धार्मिक संगठन ने नहीं किया । यहाँ किसी को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि मार्क्स का दर्शन युद्ध भौतिकवादी व एकांगी दर्शन है । जिसके पास व्यक्ति के आन्तरिक बदलाव का कोई कार्यक्रम नहीं है जबकि हमारे मार्गद्रष्टा महर्षि दयानन्द दुनिया के वह एक मात्र महामानव थे, जिन्होंने व्यक्ति के बाहरी व भीतरी बदलाव का सर्वांगीण कार्यक्रम हमें दिया ।

आर्य समाज का उद्देश्य - आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी ने जो मुख्य उद्देश्य स्पष्ट किया वह था संसार का उपकार करना । किसी आर्य समाजी या किसी हिन्दू या किसी भारतीय का उपकार करना नहीं बल्कि अफ्रीका के घने जंगलों, अरब के रेगिस्तानों, अमेरिका की चमचमाती नगरियों या जहाँ भी मानव का अस्तित्व है उसका उपकार करना । कोई दीवार इस उपकार के कार्य में नहीं रखी और आर्य समाज के इसी नियम में संसार के उपकार शब्द की व्याख्या करते हुए लिख दिया ''शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।'' यह क्रम भी बहुत महत्त्वपूर्ण है । जीवात्मा अमर है किन्तु मनुष्य का मनुष्य होना उसके शरीर पर अवलम्बित है । शरीर की उन्नति के बिना, उसके रख-रखाव के बिना, उसकी अनिवार्य जरूरतों को पूरा किये बिना मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है । अतः इस बात पर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए शास्त्रो में कहा गया है कि **''शरीरमाद्यं खुलु धर्म साधनम् ।''** अर्थात् शरीर घर्म के पालन एवं उपकार के लिए प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण साधन है । अतः उसकी उन्नति अत्यन्त आवश्यक है । महर्षि ने दूसरा कार्यक्रम सुझाया आत्मिक उन्नति करना । शरीर संसार में उपकार का एक साधन मात्र है । किन्तु शरीर के साथ-साथ उसके जीवात्मा की उन्नति एवं पवित्रता भी जरूरी है । आत्मिक उन्नति का कार्यक्रम भी महर्षि ने इसीलिए रखा, ताकि मनुष्य अपने भीतर से भी सत्य के प्रति आगह, परमात्मा के प्रति आस्था तथा प्रासंगिकता के प्रति सहृदयता अपने स्वभाव का हिस्सा बना सके । इसी प्रकार जब मनुष्य शारीरकि और आत्मिक रूप से स्वस्थ होगा तो सामाजिक उन्नति के लिए भी उसका क्रियाशील रहना आवश्यक है । क्योंकि शारीरिक और आत्मिक रूप से शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सामाजिक उपादेयता के बिना निकम्मा और समाज पर बोझ ही बना रहेगा । इसलिए उसे सामाजिक

विकास के काम में पूरी भागीदारी करनी पड़ेगी। आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य में निर्दिष्ट शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के इस मौलिक कार्यक्रम के पीछे भावना और तर्क यही है कि मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के बिना उसके मनुष्य होने का कोई महत्त्व नहीं रह जायेगा। बल्कि मनुष्य होने की प्रासंगिकता इसी में निहित है कि प्रत्येक मनुष्य शारीरिक रूप से और आत्मिक रूप से मजबूत होकर समाज को उन्नति की ओर ले जा सके। प्रश्न पैदा होता है कि आर्य समाज के इस मुख्य उद्देश्य को क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज या आर्य समाज के अनुयायी क्या करे?

१) शारीरिक उन्नति - जिस व्यक्ति के हार में कड़ी मेहनत के बाद पेटभर खाने को रोटी न हो, उसकी बहू-बेटियों एवं स्वयं को अपनी आबरू बचाने के लिए कपड़े न हों, सोने के लिए जिसके सिर के ऊपर मकान की छत न हो उसकी शारीरिक उन्नति की बात उसके लिए सबसे पहले रोटी, कपड़ा, मकान और दवाई उपल्ध्ध कराने से ही शुरू होगी। अतः यह आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक उन्नति के लिए उसकी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति कराना, उसके लिए बातावरण तैयार करना और एक मजबूत लोकशक्ति के रूप में आर्य समाज को संगठित करना हमारा मुख्य दायित्व होना चाहिए। हमारे पास अर्थात् आर्य समाज के पास ऐसा कोई विपुल स्रोत नहीं है जिसके माध्यम से दुनिया के जरूरतमंद लोगों को उनकी मौलिक आवश्यकताओं से निश्चिन्त किया जा सके। किन्तु हम एक लोकशक्ति का दबाव बनाकर साधन सम्पन्न शासन व्यवस्थाओं को प्रभावित कर सकते हैं और सामान्यजन की शारीरिक उन्नति के लिए उनका मानस तैयार कर सकते हैं। इसके लिए आर्य समाज को आगामी वर्षों में विश्वव्यापी अभियान चलाना चाहिए जिसके द्वारा शारीरिक उन्नति के लिए वांछित वर्गों की हम मदद कर सकें। पूरे विश्व में शारीरिक उन्नति से वंचित किसानों, श्रमिकों, बेरोजगारों, आर्थिक रूप से पीड़ित महिलाओं, एवं वंचित वर्गों का आर्य समाज को इस अभियान में व्यापक समर्थन प्राप्त होगा और आर्य समाज आम जनता से जुड़ सकेगा।

२) आत्मिक उन्नति - जिस देश को आध्यात्मिकता का जनक कहा जाता हो, मंत्रदृष्टा ऋषियों को जिस धरती पर वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ हो, गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी, पतंजलि, व्यास एवं अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा आदि न जाने कितने महर्षियों की तपस्या से जो भूमि पवित्र रही हो और महर्षि दयानन्द ने जिस जगह अपना आत्म बलिदान किया हो वहाँ इतनी अनैतिकता, इतना अधर्म, इतना पाखंड, भोगवाद के प्रति इतना आकर्षण हर उस आदमी के पौरुष और ईमानदारी को चुनौती है जिसे भारतीय होने का गर्व अभी भी है। केवल भारत ही नहीं पूरे विश्व में राजनैतिक सफलता और अर्थोपार्जन के लिए झूठ, बेईमानी, मक्कारी आदि आवश्यक अंग बन गये हैं। पाखंडियों की जय-जयकार हो रही है। सौ से अधिक ईश्वर अवतार अभी भी जिन्दा हैं। आर्य समाज के लिए यह एक, जबरदस्त चुनौती है। क्योंकि हम यह महसूस करते हैं कि आध्यात्मिकता से दूर होते जाने के कारण ही समाज आज इस अधोगति तक पहुँचा है आत्मिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि वेदाधारित त्रैतवाद के अनुरूप ईश्वर, जीव, प्रकृति की अवधारणाओं के आधार पर समाज की रचना हो। तदर्थ पंचमहायज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथि यज्ञ) की व्यावहारिकता की वर्तमान संदर्भो में व्याख्या करते हुए जन-जन तक फैलाना, पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा सोलह संस्कारों को सरलीकृत ढंग से तथा वैज्ञानिकता के साथ व्यावहारिक बनाने की कोशिश करना ताकि व्यक्ति नैतिक मूल्यों के आत्मानुशासन में जी सके। पतंजलि वर्णित योग के अनुरूप अष्टांग योग का प्रचार-प्रसार कर व्यक्ति की आत्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना। मनुष्य के जीवन में वेद वर्णित आश्रम व्यवस्था का विशेष महत्त्व है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चार आश्रमों में दीक्षित करना, क्योंकि एक दीक्षित आश्रमी न केवल स्वयं की आत्मिक उन्नति करता है बल्कि अन्यों की भी आत्मिक उन्नति में सहायक बन सकता है। व्यक्ति को निकम्मा, डरपोक और कायर बनाने के लिए पौराणिक पाखण्डियों एवं वेद विरुद्ध मत सम्प्रदायों का एक मिलाजुला षड्यंत्र चलता रहा है वह है भाग्यवाद। पैदा होने से लेकर मरने तक आदमी डरा-डरा सा रहता है और हर छोटी-बड़ी घटना के लिए ज्योतिषी, पुजारी, जन्मकुंडली तथा हस्तरेखाओं के फेर में पड़ा रहता है। भाग्यवाद का भय आत्मिक उन्नति में बाधक है। अतः भाग्यवाद से ऊपर कर्मवाद को महत्त्व देने के लिए लोगों को प्रेरित करना आवश्यक है। कितने आश्चर्य की बात है कि आर्य समाज की स्थापना के लगभग १४२ वर्ष के बाद भी समाज में धार्मिक पाखंडों, गुरुडम और अन्धविश्वासों की भरमार हो रही है। आदमी और ईश्वर के बीच दलाल के रूप में जो कथित गुरु और धर्माचार्य सामान्य जनता को बहकाते हैं उनके विरुद्ध आर्य समाज शास्त्रार्थों की परम्परा को पुनर्जीवित कर तमाम अवैदिक मत-मतान्तरों के असत्य का खण्डन पैनेपन के साथ करे तथा ईश्वर के अस्तित्व, उसके यथार्थ स्वरूप आदि विषयों पर चुने हुए वैदिक विद्वानों के व्याख्यान, जगह-जगह वैदिक गोष्ठियाँ कराये ताकि सच्ची आध्यात्मिकता का दर्शन हो सके।

३) सामाजिक उन्नति - जो लोग यह जानते हैं कि समाज की आर्थिक विषमता मिट जाने से सारी समस्याँए हल हो जायेंगी अथवा यह मानते हैं कि ईश्वरवाद का प्रचार होने से सब कुछ सुधर जायेगा वे बड़ी भ्रांति में हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का यह मंत्र स्पष्ट करता है कि

''अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूयऽव ते तमो यऽसम्भूत्याथंरताः॥

- यजु- १२/४० इसका तात्पर्य है केवल भौतिकवाद भी अधूरा है तथा केवल

अध्यात्मवाद भी अधूरा है। दोनों का समन्वय होना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी सिद्धान्त की स्थापना की। समाज में इतनी सारी विसंगतियाँ हैं कि उन्हें ठीक से समझे बिना और उनका निराकरण किये बिना किसी स्वस्थ समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मानव समाज सैकड़ों जातियों और उपजातियों में बंडा हुआ है जिसमें बेटी तो बेटी, रोटी तक का व्यवहार आपस में नहीं है। जन्मना जाति की अवधारणा अर्थात् जाति-पांति की परम्परा पूरे समाज को जकड़े हुए है। केवल जाति ही नहीं बल्कि विभिन्न मत-सम्प्रदायों, वस्त्रों एवं भाषाओं में बंटा हुआ समाज कैसे एक उन्नत एवं विकसित समाज कहा जा सकता है। वस्तुस्थिति यह है कि जन्मना जातिप्रथा को बनाये रखने में कई कथित धर्मगुरु भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि सामाजिक उन्नति के मार्ग बाधक जन्मना जातिवाद, साम्प्रदायकिता, जातीय आधार पर अत्याचार, नर-नारी विषमता आदि अनेक ऐसी कुरीतियाँ हैं जिनसे समाज की उन्नति अवरूद्ध हो चुकी है इनके विरुद्ध आर्य समाज आगे आये। सामाजिक उन्नति के लिए आर्य समाज पूरे विश्व में जाति आधारित अत्याचारों के विरुद्ध अभियान चलाकर जिन लोगों को समाज की उच्च जातियाँ, पिछड़ा या अछूत मानती हैं तथा उन्हें जनेऊ तक पहनने का अधिकार नहीं देती हैं उनके बीच जनेऊ पहनाओ अभियान चलाकर, गाँव की चौपाल में प्रवेश तथा बैठने या मंदिर में प्रवेश पाने की जिन्हें इजाजत नहीं दी जाती उन्हें आर्य समाज के कार्यकर्ता संगठित मोर्चे लगाकर सार्वजनिक रूप से कुंओं से पानी भरने तथा चौपाल में प्रवेश दिलाने का अभियान चलाये। आर्य समाज नारी तथा पुरुष को एक दूसरे के समान सहयोगी की तरह से देखता है और महर्षि दयानन्द ने भारतीय इतिहास में नारी की गरिमा की पुनर्स्थापना का अध्याय खोलकर ऐतिहासिक कार्य सिद्धान्त को आम जनता के मनसपटल पर स्थापित करने के लिए आर्य समाज विशेष अभियान चलाये। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के विरुद्ध आर्य समाज अग्रणी भूमिका निभाये। इसी प्रकार नारी की गरिमा की सुरक्षा के लिए चलचित्रों व विज्ञापनों में नारी के अश्लील, मद्दे व अर्धनग्न विज्ञापनों एवं प्रदर्शन के विरुद्ध अभियान चलाये और समाजरूपी रथ के दोनों पहियों को स्वस्थ बनाकर तेज गति से दौड़ाने का कार्य करे। सामाजिक उन्नति में बाधक विशेष रूप से जातिवाद को कमजोर करने के लिए अन्तरजातीय विवाहों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाये। खासकर आर्य समाज के सदस्यों के लिए यह अनिवार्य करने का प्रयत्न किया जाये कि वे अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अन्तरजातीय ही करें, अन्तरजातीय विवाह करने वालों को वार्षिकोत्सवों पर विशेष रूप से सम्मानित किया जाये और सामूहिक अन्तरजातीय विवाहों को बढ़ावा दिया जाये।

नशाखोरी के कारण समाज निरन्तर अवनीति एवं पतन की ओर जा रहा है तथा समाज की उन्नति अवरूद्ध हो रही है। आर्य समाज नशीले पदार्थों एवं मादक द्रव्यों के खिलाफ निरन्तर अभियान चलाये। मांसाहार का प्रचलन आधुनिकता का पर्याय बनता जा रहा है। लोग पशुओं के चलते-फिरते कब्रिस्तान बनने में गौरवान्वित हैं। आर्य समाज को मांसाहार के विरुद्ध वैज्ञानिक एवं अर्थशास्त्रीय तर्कों के आद्धार पर प्रचार करना चाहिए साथ ही गौहत्या एवं अन्य पशु-पक्षियों की हत्या के विरुद्ध भी वातावरण बनाना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में इसके मुख्य उद्देश्य को घोषित करते हुए जो वैश्विक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि पूरे विश्व में शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के मार्ग में जो बाधाँए हैं उन सभी के सम्बन्ध में आर्य समाज अपना दृष्टिकोण एवं घोषणा पत्र तैयार करके प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ करे। सम्भव है कि पूरे विश्व की ज्वलन्त समस्याँए तुरन्त प्रभाव से समाप्त न हों किन्तु यदि आर्य समाज इन समस्याओं के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करके इनके समाधान प्रस्तुत कर सकेगा तो यह भी एक ऐतिहासिक भूमिका आने वाले समय में आर्य समाज की मानी जायेगी। पूरे विश्व में इस समय जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण सुरक्षा प्रदूषण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट, अफ्रीकी रंगभेद की नीतिं, खतरनाक परमाणु हथियारों का निर्माण आतंकवाद आदि समस्याएँ पूरी मानवता के लिए खतरा बनी हुई हैं। ऐसे में संसार का उपकार करने का दायित्व अपने कंधों पर लेकर कार्य करने वाले आर्य समाज को न केवल इन समस्याओं के समाधान का उपाय खोजना होगा बल्कि पूरी मानवता के समक्ष नयी आशा का संचार करना होगा।

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

लेखक परिचय : स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित सन्यासी एवं नेता हैं। वर्तमान में आप आर्य समाज की शिरोमणी सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं तथा देश-विदेश में घुमकर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में संलग्न हैं। स्वामी जी ने अपने विद्यार्थीकाल से ही एक जीवनदानी के रूप में आर्य समाज का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। आपने आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के माध्यम से हजारों युवा निर्माण शिविरों का आयोजन करके युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने का कार्य किया। आपके नेतृत्व में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कई राष्ट्रीय अभियान आर्य समाज एवं सार्वदेशिक सभा ने चलाये तथा आर्य समाज की विशेष पहचान बनाई। आप एक ओजस्वी वक्ता, कुशल संगठनकर्ता, निपुण संयोजक, निष्ठावान एवं निष्णात सन्यासी हैं। अपने विशेष व्यवहार से सभी को अपनी ओर आकृष्ट करने का आपको महारथ प्राप्त है। वर्तमान में आप आर्य समाज की एकता के लिए कृत संकल्प हैं।

గాయత్రీ విజ్ఞానం

ఓం భూర్భువ, తత్సవితుర్వరేణ్యం ।
భర్గో దేవస్య ధీమహి ।
ధియో యో నః ప్రచోదయాత్ ॥

-యజుర్వేదం (36-3)

'యా గాయంతం త్రాయతే సా గాయత్రీ' అని ఋషి వాక్కు గానం చేసేవారిని అంటే జపం చేసేవారిని రక్షిస్తుంది కనుక ఈ మంత్రానికి గాయత్రీ మంత్రమని పేరు వచ్చిందని ఋషులంటారు.

ప్రపంచ ఇతిహాసాలలో మన భారతీయ ఇతిహాసం అత్యంత ప్రాచీనమైనది. సుమారు 197 కోట్ల చరిత్ర మన కుంది. మనం నిత్యం ధార్మిక కర్మలలో చెప్పుకునే సంకల్పాన్నిబట్టి యిప్పుడు సప్తమ వైవస్వత మన్వంతరంలోని యిరువది ఎనిమిదవ కలియుగ్ నడుస్తున్నది. ఒక్కొక్క మన్వంతరంలో 71 చతుర్యుగా లుంటాయి. అటువంటి 6 మన్వంతరాలు గడచిపోయాయి. 7వ మన్వంతరంలోనూ 27 చతుర్యుగాలు గడచిపోయాయి. ఇప్పుడు 28వ చతుర్యుగం నడుస్తోంది. ఈ చతుర్యుగంలో సత్య త్రేతాద్వాపర యుగాలు పూర్తయ్యి, కలియుగంలో 5,109వ సంవత్సరం నడు స్తున్నది. మన్వంతరాల మధ్యలో ఉండే సంధి కాలాలనుకూడా కలుపుకొని లెక్కలు కడితే ప్రథమ మానవసృష్టి జరిగి యిప్పటికి 197, 29, 49, 108 సంవత్సరాలు పూర్తయ్యాయి. (సర్వధారి యుగాది నాటికి).

ప్రథమ మానవసృష్టి సమయంలోనే వేదాల ఆవిర్భావం ఈ భారతావనిపై జరిగింది. హిమాలయ పర్వతప్రాంత త్రివష్టప పీఠ భూమిపై ప్రథమ మానవ సృష్టి జరిగింది. ఆ ప్రథమ మానవులలోని పరిణత బుద్ధి కలిగిన నలుగురు ఋషుల పవిత్ర హృదయా లలో అంతర్యామియైన పరమేశ్వరుడు నాలుగు వేదాలను ప్రకాశపరచాడు. వారే 'అగ్ని వాయు ఆదిత్య అంగిర' నామక ఋషులు. పూర్వ సృష్టిలో వారు చేసిన సత్కర్మలు, సాధనా తపస్సులే వారి కట్టి యోగత్యతను ప్రసాదిం చాయి. 10,589 మంత్రాలు గల ఋగ్వేదం అగ్నిఋషికి; 1,975 మంత్రాలు గల యజుర్వేదం వాయు ఋషికీ, 1,875 మంత్రాలుగల సామవేదం ఆదిత్యఋషికీ, 5,977 మంత్రాలు గల అథర్వవేదం అంగిర ఋషికీ లభించాయి. ఈ మొత్తం మంత్రాల సంఖ్య 20,416. మంత్రాలన్ని ఉన్నా గయత్రీ మంత్రాన్నే పరమమంత్ర మన్నారు మన ఋషులు. దీనికి కారణం - సద్బుద్ధి కొరకు చేసే ప్రార్థనే సర్వోత్తమమని వారభిప్రాయం.

వేదకాలం నుండి ఈ కలియుగ ప్రారంభం వరకు వేదసంస్కృతియే ప్రపంచమంతటా విస్తరించి యుండేది. భారతీయ సార్వభౌమ రాజ్యమే ప్రపంచము నేలుచుండేది. అందుచే ఆ కాలంలో గాయత్రీ జపం సర్వత్రా జరుగుచుండేది. బాలబాలికలకు 8,9 సంవత్సరాల ప్రాయంలోనే ఉపనయన సంస్కారం చేసి గురుకులాలకు పంపేవారు. గురుకులాలలో గురువులు వేదారంభ సంస్కారం జరిపి గాయత్రీ మంత్రోపదేశం చేసేవారు. అప్పటినుండి వారు జీవించి యున్నంత కాలం నిత్యం ఉదయ సాయం సంధ్యాసమయాలలో శక్తికొలది గాయత్రీజపం చేస్తుండేవారు. తద్వారా వారి బుద్ధి వికసించి విద్యావిజ్ఞానాలతో వర్ధిల్లేవారు. సత్కర్మలు చేయ ప్రేరణ పొంది ధర్మాత్ములయ్యే వారు. అభ్యుదయ నిఃశ్రేయసాలను పొంది ఆనందించేవారు. అందుచేతనే ప్రథమ స్మృతి కర్తయైన మనుమహర్షి తన ధర్మ శాస్త్రంలో- ఈ దేశ విద్వాంసులే ప్రపంచ గురువులనియు, ఈ దేశ రాజన్యులే ప్రపంచ చక్రవర్తులనియు, ఈ దేశ సదాచారమే ప్రపంచానికి ఆదర్శ మనియు ఎలుగెత్తి చాటాడు-

శ్లో॥ ఏతద్దేశ ప్రసూతస్య సకాశా దగ్రజన్మనః॥
స్వం స్వం చరిత్రం శిక్షేరన్ పృథివ్యాం సర్వమానవాః ॥

-మనుస్మృతి 2-20 (139)

మహాభారతయుద్ధంలో పెక్కురు వీరులు, విద్వాంసులు మరణించటంతో పై పరిఠీస్థితి క్రమంగా క్షీణించింది. స్వార్థ సామంతరాజులు ఈ దేశాన్ని ముక్కలు ముక్కలుగా చేసివేశారు. దానితో విదేశీయులు మన దేశాన్ని ఆక్రమించడానికి అవకాశం ఏర్పడింది. స్వార్థగురువులు మన అఖండ వేదసంస్కృతిని ముక్కలు ముక్కలుగా చేసి సాంప్రదాయాల నేర్పరచారు. దానితో ఐకమత్యం కరువ య్యింది. ఎట్లో భౌగోళిక స్వాతంత్ర్యం లభించింది కాని యింకా భావదాస్యం పోలేదు. ఆంగ్లమానస పుత్రులు ఆంగ్లేయులనే గురువులుగా నుపాసిస్తూవుంటే, అమాయ కులైన సామాన్య ప్రజలు స్వార్థగురువుల వలలలో చిక్కుకొని వారి సాంప్రదాయిక బావులలో కూపస్థమండూకాలవలె జీవిస్తు న్నారు. మధ్యకాలంలో 'స్త్రీ శూద్రౌ నాధీ యాతాం' అనే కల్పిత సూత్రాల ప్రచారంతో స్త్రీలు శూద్రులు వేదవిద్యలకు, గాయత్రీ ఉపదేశానికి దూరమైపోయారు. మిగిలిన అగ్రవర్ణాల పురుషులును గాయత్రీ జపం చేయటంలేదు. వారి గురువు లుపదేశించిన ఓం నమో నారాయణాయ, ఓం నమో భగవతే వాసుదేవాయ, ఓం నమఃశివాయ, హరే రామ హరే కృష్ణ... మొదలైన వాక్యాలనే మహా మంత్రాలుగా భావిస్తున్నారు. వాటి నే జపిస్తున్నారు. అవే మాకు ముక్తిని ప్రసాది స్తాయనే భ్రాంతిలో ఉంటున్నారు.

కొద్దిమంది పూర్వాచార పరాయణులు సంధ్యావందనంలో గాయత్రిని స్మరిస్తున్నా వారి దృష్టిలో గాయత్రి ఒక దేవత. ఐదు వేరువేరు రంగులు తీర్చే ఒక స్త్రీదేవతామూర్తి. మరికొందరి దృష్టిలో గాయత్రి (సావిత్రి) అంటే ఆకాశంలో కనబడే సూర్యగోళం. ఆ దృష్టితోటే వారు గాయత్రీమంత్రంతో సూర్యునకు అర్ఘ్యప్రదానం చేస్తున్నారు. గాయత్రీ మంత్రం లోని 'సవిత' పదం సర్వవ్యాపకుడు సర్వాంత ర్యామి సృష్టికర్తయునైన పరమేశ్వ రునకు వర్తిస్తుందని తెలియక ఈ పొరబాట్లు జరుగు తున్నాయి.

నే నొకసారి గాయత్రీమంత్ర ఆంగ్ల వ్యాఖ్యానంతో కూడిన ఒక లఘు గ్రంథాన్ని 70 సంవత్సరాలు వయసుగల ఒక వైద్యమిత్రున కిచ్చాను. వారు దానిని చదివి చాలా బాగుందన్నారు. గాయత్రి ఒక వేద మంత్రమా ? స్త్రీదేవత కాదా ? నా కీ విషయం ఇంతవరకు తెలియదే ! అని ఆశ్చర్యం వ్యక్తపరచారు. వారు చిన్ననాటి నుండియు గురుసేవా శుశ్రూషలు చేస్తూ బ్రహ్మచారిగా అనేక ఆశ్రమాలలో గడపినవారు. అట్టివారికే గాయత్రిని గురించి సరియైన అవగాహన లేకుంటే సామాన్యుల సంగతి వేరే చెప్పాలా ?

ఈ మధ్య గాయత్రీమంత్రాన్ని అనుకరిస్తూ అనేక గాయత్రీ మంత్రాల కల్పన జరుగు

తోంది. గణేశగాయత్రీ, నృసింహ గాయత్రీ, విష్ణుగాయత్రీ, శివగాయత్రీ మొదలైన 24 గాయత్రీమంత్రాల కల్పన చాలా కాలం క్రిందటనే జరిగింది. అవికాక, ఈ మధ్య కొందరు భక్తులు వారి గురువుల పేర్లతో గాయత్రీ మంత్రాలను కల్పిస్తున్నారు. ఉదాహరణకు - కర్నూలు జిల్లా బేతంచెర్ల గ్రామంలో పూదోట లింగమూర్తి స్వామి గారి మఠం ఒకటుంది. ఆ మఠస్వామి గారు వారి గురువుల పేర్లతో 'ఓం పూదోట రామాయ విద్మహే, శివరామాయ ధీమహి, తన్నో లింగ ప్రచోదయాత్' అనే వాక్యాలను రచించి, ఇది పూదోట గాయత్రీ మంత్రమని ప్రచారం చేశారు. వారి శిష్యుల కుపదేశించారు. ఇట్టివే గురువుల పేరుతో, క్రొత్త దేవీదేవతల పేర్లతో మరెన్నో గాయత్రీ మంత్రాల కల్పన జరుగుతోంది. ఈ స్థితిలో వేదాల ద్వారా సృష్టికర్తయైన పరమేశ్వరుడుపదేశించిన నిజమైన గాయత్రీమంత్రం మరుగున పడిపోతున్నది.

గాయత్రి విశ్వామిత్రుని శాపానికి గురయ్యిందనీ, ఆ శాపనివారణార్థం మరియొక మంత్రం ముందు జపించి అనంతరం గాయత్రీ జపం చెయ్యాలని కొందరి ప్రచారం. మరికొందరు శిరస్స హితంగా గాయత్రీ జపం చెయ్యాలంటున్నారు. **'ఓం ఆపో జ్యోతీ రసోమృతం బ్రహ్మ భూర్భువః స్వరోమ్'** అనే ఋషి వాక్యాలనే గాయత్రి శిరస్సంటున్నారు. గాయత్రీ మంత్రం తరువాత శిరస్సని చెప్పబడే ఈ వాక్యాలను పలకాలంటున్నారు. కాని, మన ప్రాచీన శాస్త్రాలను పరిశీలించి చూస్తే యిట్టి నిర్దేశాలేవీ కనబడటం లేదు. కనుక యివన్నీ మధ్య కాలంలో గురువులు కల్పించి ప్రచారం చేసినవే.

కొందరు ఈ గాయత్రీ మంత్రానికి - 'గాధిపుత్రో విశ్వామిత్రః ఋషిః' అని అంటు న్నారు. కాని, వేద సంహితలలో ఈ మంత్ర ఋషి-'విశ్వమిత్రః' అని మాత్రమే ఉంది. శ్రీరాముని గురువైన విశ్వమిత్రుడే గాయత్రీ మంత్ర ఋషియని నిరూపించలేము. రామాయణాని కన్న పూర్వ గ్రంథాలైన బ్రాహ్మణ ఆరణ్యక గ్రంథాలలోను, శాఖా గ్రంథాలలోను ఈ మంత్ర ఋషి విశ్వామిత్రుడని మాత్రమే నిర్దేశముంది. అందుచే వేదకాలంనాడే విశ్వామిత్రుడను పేరుగల ఒక ఋషి ఈ మంత్రార్థ ద్రష్టయై మంత్రార్థాన్ని లోకంలో ప్రచారం చేసి యుంటాడు. ఆ గాయత్రీ మంత్రాన్ని ఈ చతుర్యుగంలోని త్రేతా యుగంలో శ్రీరాముని గురువైన విశ్వామిత్రుడు జపించి సిద్ధిని బొంది- బుద్ధి వికాసాన్ని బొంది విజ్ఞానవంతుడై అద్భుతాలను చేసి యుండ వచ్చును.

ఇక శిరస్సనేది మంత్రం చివరకాక మొదట ఉండాలి. మరొక మంత్రాన్ని గాయత్రీ శిరస్సనే కన్న మంత్రంలోని మహావ్యాహృతులైన **'భూర్భువః స్వః'** అనే మొదటి పదములనే శిరస్సని చెబితే సమంజసంగా ఉంటుంది. ఈ పరిస్థితులలో గాయత్రిని గురించి సరియైన అవగాహన కలిగించాలనే సదుద్దేశముతో ఈ లఘుగ్రంథాన్ని ప్రచురించ సంకల్పించాము. ఏ కొద్దిమంది గాయత్రిని గురించి సరిగా అర్థం చేసుకున్నా మా యీ కృషి సఫలమైనట్లు భావిస్తాము.

ఇక మనం గాయత్రి అంటే ఏమిటి ? ఆ మంత్రంలో ఉండే మూలార్థం ఏమిటి ? ప్రతీ పదంలో ఉండే ముఖ్యమైన అర్థాలు ఏమేమిటి ? అనే విషయాలను సంక్షిప్తంగా తెలుసుకొందాము.

గాయత్రీ అనగా......

గాయత్రీ అంటే వేదంలోని సప్త ఛందస్సులలో ఒకటి. మూడు పాదాలు కలిగి ప్రతీ పాదంలోనూ 8 అక్షరాలతో మొత్తం 24 అక్షరాలు గల పద్య ఛందస్సును గాయత్రీ ఛందస్సు అంటారు. ఒకటి రెండు అక్షరాలు గల పద్య ఛందస్సును గాయత్రీ ఛందస్సు అంటారు. ఒకటి రెండు అక్షరాలు తక్కువ ఉన్నా వ్యవహార సౌలభ్యం కోసం గాయత్రీ ఛందస్సుగానే చెప్పుకోవటం లోకవ్యవహారం. మన ప్రార్థనా మంత్రమైన గాయత్రీ మంత్రంలో 23 అక్షరాలు మాత్రమే ఉన్నాయి. అందుచే యిది 'నిచృత్ గాయత్రీ' ఔతుంది. అంటే ఒక అక్షరం తక్కువగల గాయత్రి. అయినప్పటికీ యిది గాయత్రీమంత్రంగానే ప్రసిద్ధిని పొందింది.

అక్షరాలను లెక్కించేటప్పుడు అచ్చులను, అచ్చుతోకూడిన హల్లులను మాత్రమే అక్షరాలుగా లెక్కిస్తారు. కేవలం హల్లులను (పొల్లు అక్షరాలను) అక్షరాలుగా లెక్కించరు. గాయత్రీ మంత్రంలో మొదట ఉచ్చరించే 'ఓం' కారాన్నీ, 'భూర్భువః స్వః' అనే మూడూ మహావ్యాహృతులను ఈ లెక్కలోనికి తీసుకోరు. 'తత్సవితుర్వరేణ్యం' అనే పదములతోటే గాయత్రీ మంత్రం ప్రారంభమౌతుంది. దీనిలో మొదట 'తత్' అను సర్వనామం రావటంచేత దానికి వాచ్యమైన పరమేశ్వర నిర్దుష్టలక్షణం గల మహావ్యాహృతులను కలిపి గాయత్రిని చెప్పుకోవటం అనాదిగా వస్తున్న ఆచారం. వాటితో బాటు పరమేశ్వరుని ముఖ్యనామమైన 'ఓం'ను కూడా ముందు చెప్పుకోవటం జరుగుతోంది. గాయత్రీ మంత్రంలోని మొదటి పాదంలో దత్, స, వి. తుర్, వ, రే, ణ్యం అనే 7 అక్షరాలు మాత్రమే ఉన్నాయి. అందుచే సస్వర వేదపాఠం చేసే వేద పండితులు పింగల ఛంద: సూత్ర నియమముల ననుసరిస్తూ చివరి అక్షరమైన 'ణ్యం'ను 'ణ్యఅమ్' లేదా 'ణియమ్' అను మాదిరిగా వలుకుతారు. కాని నిచృద్గాయత్రినికూడా గాయత్రిగానే లెక్కిస్తారు కనుక మనవంటి సామాన్యులు 'ణ్యం' గానే పలుకవచ్చు.

గాయత్రీ - త్రాయత్రీ

శతపథ బ్రాహ్మణం (14-8-25-7) లో గాయత్రీ పదం ఈ విధంగా నిర్వచింపబడింది - 'గాయంతం త్రాయతే' 'గయాన్ ప్రాణాన్ త్రాయతే' - గానం చేసేవారి ప్రాణశక్తిని రక్షిస్తుంది కనుక దీనికి గాయత్రీ మంత్రమని పేరు. బృహదారణ్యకోపనిషత్తులోనూ యిట్లే నిర్వచింపబడింది.

"సా హైషా గయాంస్తత్రే, ప్రాణా వై గయాః, తత్ ప్రాణాంస్తత్రే తద్యద్ గయాం స్తత్రే తస్మాద్ గాయత్రీ నామ, స యామేవ వామూం సావిత్రీమన్వాహ,
ఏషైవ సా, స యస్మా అన్వా హ తస్య ప్రాణాంస్త్రాయతే ॥" (బృ.ఉ. 5-14-4)

గాయ + త్రీ అనే రెండు పదములు కలిసి గాయత్రీ పదం ఏర్పడుతుంది. గాయ పదం గయ వల్ల ఏర్పడుతుంది. గయ అంటే ప్రాణశక్తులు. ఈ మంత్ర జపంవల్ల ప్రాణశక్తులు రక్షింపబడతాయి. కనుక దీనికి గాయత్రీమంత్ర మనే పేరు వచ్చింది.

గాయత్రీ ధ్యానం అంటే వాస్తవంగా ప్రాణముల ఇంద్రియముల సంయమనం. ఆచార్యుడు శిష్యునకు (బ్రహ్మచారికి) వేదారంభ సంస్కారంలో ఉపదేశించే సావిత్రియే గాయత్రి. గాయత్రీ ఉపదేశమంటే ప్రాణరక్షణ చేయటమని భావం. ఆ బ్రహ్మచారి గాయత్రీ మంత్రంతో నూతన జీవితాన్ని ప్రారంభిస్తాడు.

సామాన్యంగా మన శరీరంలోని

ప్రాణశక్తులు ఇంద్రియలోలతవల్ల ఖర్చయి పోతూవుంటాయి. అర్థభావనతో గాయత్రీ జపం చేసేవారు అంతర్యామియైన సవితా పరమేశ్వరుని సద్బుద్ధి నిమ్మని ప్రార్థిస్తారు. ప్రార్థన కనుగుణంగా సంయమంతో జీవిస్తారు. ఆ ప్రయత్నంతో కూడిన ప్రార్థనను పరమేశ్వరుడు మన్నించి యింద్రియాలను నిగ్రహించగల ఆత్మబలాన్ని ప్రసాదిస్తాడు. తద్వారా వారి ప్రాణశక్తులు బలపడతాయి. ఆయురారోగ్యాలు వృద్ధి చెందుతాయి. ఆ విధంగా గాయత్రి వారిని రక్షిస్తుంది.

నాలుగు వేదాలలోను గాయత్రీ ఛందస్సుతో నున్న మంత్రాలు వేలకొలది ఉన్నాయి. అయినా ఈ మంత్రానికే గాయత్రీ మంత్రమనే పేరు రూఢిగా (యోగరూఢిగా) అనాదిగా వస్తున్నది.

సావిత్రీమంత్రం

గాయత్రీ మంత్రాన్ని సావిత్రీమంత్ర మరియు అంటారు. దీనికి కారణం ఈ మంత్రదేవత సవిత కావటం. వైదిక పరిభాషలో మంత్రదేవత అంటే మంత్రంలో తెలుపబడిన విషయం (సబ్జెక్ట్ ఆఫ్ ది మంత్ర). మననం చేయదగిన వాటిని మంత్రాలంటారు. మననం అంటే లోతుగా ఆలోచించటం. సామాన్యంగా వేదాలలో ఉండేవాటినే మంత్రాలంటారు. ఇవన్నీ లోతుగా ఆలోచించ తగినవే. ఎంత లోతుగా (డీప్‌గా) ఆలోచిస్తే అంత వివరంగా ఆ మంత్రార్థం బోధపడు తుంది. వేదాలలో సవిత దేవతగా గల మంత్రాలు చాలా ఉన్నాయి. అయినప్పటికీ గాయత్రీమంత్రాన్నే సావిత్రీమంత్ర మనే వ్యవహారం కూడా అనాదిగా వస్తున్నదే. గోపథ బ్రాహ్మణ పూర్వార్థం (1/3)లో సావిత్రి వేదాల మాతగా 'వేదానాం మాతరం' అని చెప్పబడింది. దీని ఉపాసనవల్ల అనంత శ్రీ లభిస్తుందనియు చెప్పబడింది. ఇచట అనంత శ్రీ అంటే 'ముక్తి' అని గ్రహించాలి. సవితను గురించి ముందు పుటలలో వివరంగా తెలిసి కొందాము.

గురుమంత్రం

గాయత్రీమంత్రానికి గురుమంత్రమని మరొక పేరు. పూర్వపుటలలో తెలిసికొన్నట్లుగా - ప్రాచీనకాలంలో విద్యాభ్యాసం చేయవచ్చిన శిష్యులకు గురువులు వేదారంభ సంస్కారం చేసి గాయత్రీమంత్రోపదేశం చేసేవారు. అందుచే ఈ మంత్రానికి గురుమంత్ర మనే పేరొచ్చింది. ఇంతేగాక, ఈ మంత్రం పరమ గురువు పరమేశ్వరుడుపదేశించినదే కదా !

యోగదర్శనంలో పతంజలి మహర్షి చెప్పినట్లు **(స ఏష) పూర్వేషామపి గురుః కాలేనానవచ్ఛేదాత్**-(1-6) పూర్వఋషులకు -ఆదిఋషులకు పరమేశ్వరుడే గురువు అట్టి మూల గురువుయొక్క ఉపదేశం కనుక గాయత్రీ మంత్రాన్ని 'గురుమంత్ర' మన్నారు మన ఋషులు.

జపమంత్రం - పరమమంత్రం

మన ప్రాచీన శాస్త్రాలలో అక్కడక్కడ గాయత్రీమంత్రాన్ని జపమంత్రమనీ, పరమ మంత్రమనీ పేర్కొనటం కనబడుతుంది. ఈ మంత్రం వేదాల సారమనే భావంకూడా అక్కడక్కడ కనబడుతుంది. మనుమహర్షి తన ధర్మశాస్త్రంలో దీనికి వివరణ యిస్తూ ఈ విధంగా చెప్పారు.

శ్లో॥ అకారం చాప్యుకారం చ మకారం చ ప్రజాపతిః ।
వేదత్రయాన్నిరదుహద్ భూర్భువః స్వరితీతి చ॥

ప్రజాపతియైన పరమేశ్వరుడు అకార, ఉకార, మకారముల కలయికతో (అ+ఉ+మ) ఏర్పడిన 'ఓ3మ్' పదమును మరియు మహా వ్యాహృతులైన భూః భువః స్వః అను పదములను వేదాల నుండి పిండాడు.

శ్లో॥ త్రిభ్య ఏవ తు వేదేభ్యః పాదం పాదమదూదుహత్ ।
త దిత్యృచోఽస్యాః సావిత్ర్యాః పరమేష్ఠీ ప్రజాపతిః । -మనుస్మృతి (2-76,77)

అట్లే, పరమేష్ఠీ ప్రజాపతియైన పరమేశ్వరుడు ఒక్కొక్క పాదమును పిండి మూడు పాదములుగల సావిత్రీ (గాయత్రీ) మంత్రాన్ని నిర్మించాడు.

అంటే, ఆ వేదసారములను ఒక్కొక్క అక్షరంగా ఒక్కొక్క పాదంగా సంక్షిప్తపరచి ఉపదేశించినట్లు గ్రహించాలి. వేదాలు నాలుగు అయినప్పటికీ వాటిలోని మంత్రాలు మూడు విధాలుగా ఉంటాయి కనుక వాటిని వేదత్రయీ అంటారు. ఋక్కులు ఛందోబద్ధమైన పద్యాలుగా ఉంటాయి. యజుష్షులు గద్యాత్మకంగా-వచనాలుగా ఉంటాయి. సామములు గానాత్మకంగా-గీతాలుగా ఉంటాయి. అథర్వవేదంలోని మంత్రాలు కొన్ని పద్యాలుగా, కొన్ని గద్యాలుగా ఉంటాయి కనుక వాటినికూడా పై మూడింటిలో కలిపివేసి వేదత్రయిగా పేర్కొంటారు.

మన ఋషులు గాయత్రీ మంత్రాన్ని వేదత్రయీ సారంగా భావించి జపించదగిన మంత్ర మన్నారు. ఈ మంత్రజపంవల్ల బుద్ధి వికసించి మిగిలిన మంత్రాలలోని జ్ఞాన విజ్ఞానాలను చక్కగా తెలిసికోగలుగుతారు కనుక.

ఇంతేగాక, ఈ మంత్రంలో స్తుతి ప్రార్థనోపాసనలు మూడూ కలిసి ఉన్నాయి. మొదటి పాదమైన **'ఓం భూర్భువః స్వః, తత్సవితుర్వరేణ్యం'**లో పరమేశ్వరుని నిస్పష్టమైన స్తుతి ఉంది. రెండవ పాదమైన **'భర్గో దేవస్య ధీమహి'**లో వికసితమైన సద్బుద్ధి నిమ్మనే ప్రార్థన ఉంది. అట్టి బుద్ధి ఉంటే అభ్యుదయాన్ని, నిశ్రేశయసాన్ని (మోక్షాన్ని) కూడా పొందగలుగుతాం. ఇంతకన్న మానవుడు పొందగలిగే దేముంటుది ? కనుక మహర్షులు దీనిని విశేషంగా జపించవలసిన పరమమంత్ర మన్నారు.

మన ప్రాచీన యితిహాసాలైన రామాయణ మహాభారతాదులలో రామలక్ష్మణులు, శ్రీకృష్ణుడు. ఋషులు పరమమంత్రాన్ని జపించినట్లు వర్ణనలున్నాయి. **'వీరౌ జేపతుః పరమం జపమ్', 'జపేత్ పరమం మంత్రం' 'ఋషయో నిత్యసన్ధ్యాత్వాద్దీర్ఘ మాయురవా ప్నువన్'** అను వాక్యాలు కనబడతాయి. పరమమంత్ర మంటే ఉత్తమోత్తమ మంత్రమని భావం. బృహదారణ్యకోపనిషత్తు మాండూక్యో పనిషత్తు మొదలైన ఉపనిషత్తులలో గాయత్రీ మంత్ర జపంవల్ల కలిగే ఆధ్యాత్మిక ప్రయోజనం ఎంతగానో కొనియాడబడింది.

గాయత్రీ జపంవల్ల ఆధ్యాత్మిక ప్రయోజ నంతోబాటు కొంత భౌతిక ప్రయోజనం కలుగుతుందని చెప్పవచ్చు. ఇందుకు కొన్ని వైజ్ఞానిక ఆధారాలు కనబడు తున్నాయి. శ్రీ సుధాంశు మహరాజ్ గారు ఒక విషయం చెబుతూవంటారు - "ఒక జర్మన్ సైంటిస్టు ఒక విచిత్రమైన ధ్వని ప్రకంపన గ్రాహక యంత్రాన్ని నిర్మించాడు. దాని ముందు ఎవరైనా మాట్లాడితే - పాడితే దాని కనుగుణంగా టేప్‌రికార్డర్, ఏంప్లిఫయిర్‌లలో ఉండే డెసిబుల్ స్కేల్ మాదిరిగా లైట్లు వెలుగుతాయి. డెసిబుల్ స్కేల్‌లో ధ్వనియొక్క హెచ్చుతగ్గులు మాత్రమే సూచింపబడతాయి కాని మధురత, కఠోరత గుర్తింపబడవు. జర్మన్ సైంటిస్టు నిర్మించిన యంత్రంలో మాధుర్యతయొక్క హెచ్చుతగ్గులు మాత్రమే

यज्ञोपवीत

-गजानन्द आर्य

यज्ञोपवीत को उपनयन, व्रतबन्ध और जनेऊ भी कहा जाता है। सोलह संस्कारों में से एक संस्कार उपनयन-संस्कार है। जिसके साथ-साथ बालक एवं बालिका का वेदारम्भ अथवा विद्या अध्ययनकाल आरम्भ होता है। विद्या आरम्भ से पूर्व इस व्रतबन्ध को स्वीकार किया जाता है। गृहस्थ और वानप्रस्थ के सब कर्त्तव्य-कर्मों में इस चिह्न को धारण किये रहना धार्मिक कृत्य बन जाता है। संन्यासी हो जाने पर जब संन्यासी स्वयं यज्ञस्वरूप हो जाता है तब यह नियम शिथिल हो जाता है।

यद्यपि वर्ण-व्यवस्था में समाज को चार भागों में बाँटे जाने का विधान है, किन्तु शिक्षा की दृष्टि से मुख्य वर्ग दो होते हैं-एक शिक्षित वर्ग दूसरा अशिक्षित वर्ग। शिक्षित वर्ग को 'द्विज' संज्ञा दी गई है, जिनके सम्मान का सूचक चिह्न यज्ञोपवीत है। दूसरा अशिक्षित वर्ग वह है जो शिक्षित किये जानेवाले प्रयासों के पश्चात् भी शिक्षित न होकर द्विज नहीं बन पाते। ऐसे वर्ग को उपनयन का अधिकार नहीं। यज्ञोपवीत के अधिकार के साथ बहुत-से कर्त्तव्य इसके साथ लगे हैं, जिनकी व्याख्या विद्वज्जन समय-समय पर करते रहते हैं।

'यज्ञोपवीत' के प्रति आर्य समाज की बहुत अधिक श्रद्धा है। महर्षि दयानन्द के पूर्व केवल जन्म से वर्ण-व्यवस्था मानने वाले ब्राह्मण समुदाय ने यज्ञोपवीत पर एकमात्र अधिकार जमा रखा था। ब्राह्मण का लड़का पढ़ा-लिखा न होने पर भी जनेऊ लिये हुए होता था, जबकि कर्म से बने द्विज अन्य वर्णों में जन्मे होने के कारण इस व्रतबन्ध से वंचित थे। ऋषि ने इस दुर्व्यवस्था का प्रतिकार करके द्विज (क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) का उपनयन आवश्यक ठहराया।

ऋषि दयानन्द को पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होकर जनेऊ की उपेक्षा से बड़ी पीड़ा थी। सत्यार्थप्रकाश में ब्राह्मसमाज की आलोचना में उन्होंने लिखा है- 'जो विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान, ईसाइयों के सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहिनते हो और तमगों की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था'?

पूना-प्रवचन में यज्ञोपवीत के विषय में ऋषि द्वारा दिये गये विचार आर्य समाज की मान्यता को स्पष्ट करते हैं। उन्होंने कहा था पुरुषों में विद्यारम्भ के समय उत्साह हो, इस उद्देश्य से व्रतबन्ध-विषय में विशेष नियम ठहराये हैं। स्त्रियों को भी विद्या सम्पादन का अधिकार पहले था और उसके अनुकूल उनका भी व्रतबन्ध-संस्कार पूर्व में करते थे। विद्वान् अर्थात् ब्राह्मण लोग आर्य कुलोत्पन्न बालक को विद्यारम्भ के समय कपास का यज्ञोपवीत विशेष चिह्न ज्ञानधारण करने को देते थे। इसके धारण करने से बड़ी ही जवाबदारी रहती थी। यदि ठीक-ठीक सम्पादन नहीं हुई तो चाहे ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुआ हो तो भी उसका यज्ञोपवीत छीना जाता और उसकी अप्रतिष्ठा होती थी। उसी तरह शूद्रादिक भी उत्तम विद्या सम्पादन कर ब्राह्मणत्व के अधिकारी होकर यज्ञोपवीत धारण करते थे, इसप्रकार की व्यवस्था प्राचीन आर्य लोगों ने करा रखी थी। इस कारण सब जाति के पुरुषों की और स्त्रियों को विद्या सम्पादन करने के विषय में उत्साह बढ़ता रहता था।

आर्य समाज अपने सदस्यों, सभासदों और आर्यदेवियों को उपनयन धारण करने की प्रेरणा करता है। समस्त संस्कारों एवं यज्ञों में यजमान के रूप में बैठे दम्पती को यज्ञोपवीत धारण करके बैठने का विशेष निर्देश रहता है। यज्ञोपवीत (यज्ञ + उपवीत) ही यज्ञ के समीप ले-जाता है, यज्ञ में बैठने का अधिकार प्रदान करता है।

సూచింప బడతాయి. ఆ మంత్రం ముందు పురుషుల మాటలు 155 ప్రకంపనాలను కలిగించగా, స్త్రీల మాటలు 225 ప్రకంపనాలను కలిగించాయి. మాట్లాడేవారి వాణిలోని మధురతను బట్టి ఈ ప్రకంపనాలు కొద్ది హెచ్చు తగ్గులుగా ఉంటాయి. మధురంగా కూసే కోయిలముందు ఆ యంత్రాన్ని ఉంచగా 500 ప్రకంపనాలు కలిగాయి. అదే యంత్రం ముందు స్పష్టమైన ఉచ్చారణగల దక్షిణ దేశపు వేదవండితునిచే గాయత్రీ మంత్రాన్ని పఠింపచేయగా 700 ప్రకంపనాలు కలిగాయి. వేరే మంత్రాలు గాయత్రీ మంత్రం కలిగించినన్ని ప్రంకపనాలను కలిగించలేదు. దానితో సైంటిస్టులు గాయత్రిలోని అక్షరాలలో ఏదో అద్భుతమైన భౌతికశక్తి దాగి ఉన్నట్లు అభిప్రాయపడుతున్నారు. కనుక ఈ మంత్రాన్ని ఉచ్చరించేవారికీ, శ్రవణం చేసేవారికీ వారి శరీరంలోనూ, మనస్సులోనూ మంచి వరిణామమే కలిగించ గలదని మనం ఊహించవచ్చు" నంటారు. ఆయన యింకా ఇలా అన్నారు.

"గాయత్రీమంత్రాన్ని ఉచ్చరించకున్నా, ఇతరులు ఉచ్చరిస్తున్నపుడ, చదువుతున్నపుడు వినే వ్యక్తిపై కూడా దీని ప్రభావం ఉంటుందని ఆ జర్మన్ శాస్త్రవేత్త అన్నాడు. అతడు యంత్రాలతో కూడిన ఒక చిన్న మానవాకారాన్ని తయారుచేశాడు. ఆ ఆకారానికి చిన్న చిన్న లైట్లను అమర్చాడు. ఆ యంత్రం ముందు ఎవరైనా వ్యక్తి నిలుచుని మాట్లాడితే ధ్వనిలోని హెచ్చుతగ్గుల ననుసరించి ఆ లైట్లు వెలుగుతాయి. విచిత్రం ఏమంటే ఆ మానవయంత్రం ముందు ఒక వ్యక్తి నిలుచుని గాయత్రీమంత్రం చదివితే కాళ్ళ నుండి తలదాకాగల ఆ యంత్రంలోని లైట్లన్నీ ఒక్కసారిగా వెలగటం ప్రారంభించాయి. ప్రపంచంలోని ఏ మంత్రం చదివినా లేదా ఏ రకమైన సంగీత ధ్వనులు వెలువడినా ఆ యంత్రంలోని మొత్తం లైట్లన్నీ ఒక్కసారిగా వెలగలేదని ఆ శాస్త్రవేత్త అన్నాడు. గాయత్రీ మంత్రోచ్చారణలో వెలువడే వైబ్రేషన్స్ అద్భుతమైనవి కనుకనే కేవలం ఆ మంత్రం చదివినప్పుడే లైట్లన్నీ వెలుగుతున్నా యన్నాడు. ఈ పరిశోధన ఆధారంగానే ప్రసిద్ధ ఆధునిక తత్త్వవేత్త ఒకరు హరిద్వార్‌లో యిలాంటి యంత్రాన్ని తయారుచేసి ప్రదర్శించారు. గాయత్రీ మంత్రం ఒక భౌతిక యంత్రం మీదనే

క్ర.శ: పేజీ 15

महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार

- डॉ. सत्यकाम आर्य

जंजीरों से जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने,

जिसको भी काल न बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने,

घनघोर तिमिर के आंगन में तू बीज उषा के बोला था,

तूने आवाज लगाई भी जब सारा भारत सोता था ॥

'अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्मम राज्य इस समय नहीं है । जो कुछ है सो भी विदेशियों द्वारा पादाक्रान्त हो रहा है । कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है । दुर्दिन जब आता है, तब देश वासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते है । कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है । मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं ।'' साक्षात्कृतधर्मा, महानयोगी, आदित्य ब्रह्मचारी, परमवेदज्ञ, अद्वितीय वैश्यकरण, तर्कशिरोमणि, अविपरम्परा पोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह अन्तरवेदना अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सन् १९६४ में व्यक्त किया था । यह पीड़ा भारत की उन्नीसवीं शताब्दी की दशा का हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत करती है । तत्कालीन भारतीयों के नैतिक एवं सामाजिक जीवन में सर्वत्र अस्थिरता, अराजकता एवं अशान्ति का पूर्णतः प्रभाव था । पराधीन देश जन्मना जातिवाद छुआछूतवाद, मूर्तिवाद, अवतारवाद, अन्ध विश्वास, सामाजिक रूढ़ितावाद (मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, भूतप्रेतवाद आदि) से पूरी तरह ग्रस्त था । ऐसी विषम परिस्थिति में तत्कालीन देशवासियों के मन में स्वतन्त्रता बन्धुत्व एवं एकत्व जैसे उदात्तभावों के आने का प्रश्न ही नही था । सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेज मिशनरियों का बोलबाला था । राजाराम मोहन राय जैसे सुधारक भी तब वाराणसी में स्थापित संस्कृत विद्यालय के प्रशंसक नहीं थे क्योंकि वह अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों-कॉलेजों के पक्षधर थे ।

बहुतेरे प्रबुद्धजन अँग्रेजियत को भारत की प्रगति का प्रतीक मानते थे । लार्ड मैकाले ने ऐसे ही वातावरण को देख अपने पिता को आत्मविश्वास से भरपूर पत्र लिखा था- ''मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि शिक्षा सम्बन्धी योजना सफल हो गई तो बंगाल में ३० वर्षो बाद कुलीन एवं सम्पन्न श्रेणियों में एक भी मूर्तिपूजक (हिन्दू) नहीं बचेगा । ईसाइयत के प्रचार के लिये कोई अन्य प्रयत्न किये बिना यह काम सहज ही सम्पन्न हो जायेगा । यह सत्य है कि उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में इस भविष्यवाणी के मिथ्या सिद्ध होने की बहुत कम सम्भावना थी । इसी कालखण्ड में महर्षिदयानन्द ने भारतीयों की इस मनोदशा का परिचय प्राप्त किया साथ ही इस दुर्भाग्य एवं मिथ्या प्रवाह को अपनी अदम्भ्य जीवनी शक्ति, आत्मतप और प्रखर समाज सुधारक भावना के द्वारा मोड़ने एवं रोकने का यत्न प्रारम्भ किया ।

संक्षिप्त जीवन परिचय-

''आग को ऐसा सहेजा क्रान्ति फूँकी थी निराली,

वेद की जलती ऋचा से जिन्दगी ऐसी सजाली,

साधना आलोक की अभिव्यक्तियों में लय हुई क्यों ?

तुम जले तो मोर आया, तुम बुझे तो थी दिवाली ॥

कवि की इन पंक्तियों का भाव एक होनेहार बालक के जीवन पर अक्षरशः सही अवतरित है जिसका शुभ जन्म १२ फरवरी, १९२८ को सौराष्ट्र प्रान्तस्थ मौरवी राज्यान्तर्गत ग्राम टंकारा निवासी औदीच्य कुलीन शिवोवासक जन्मना ब्राह्मण दम्पत्ति श्री कर्षण जी तिवारी एवं श्रीमती यशोदा बाई के घर आंगन में हुई । तेजस्वी एवं सुसंस्कारित बालक मूलशंकर ५ वर्ष की अवस्था में वर्ण शिक्षा प्राप्त कर ८ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीतो हो गया । उपनयन संस्कार का प्रभाव ही कहें कि उसने १४ वर्ष एकी सुकुमार वस्था ही में व्याकरण, यजुर्वेद तथा अन्य वेदों के कुछ अंशों को कण्ठस्थ कर लिया था । मूलशंकर को संवत् १९६५ में शिवरात्रि के दिन शिव मूर्ति पर चढ़े नैवद्य को चूहों द्वारा खाते देख सच्चे शिव दर्शन की लालसा जगी । कालान्तर में छोटी बहन एवं धर्मात्मा चाचा के असामयिक मृत्यु पर हृदय में मृत्युज्जंयी बनने की वैराग्य वृत्ति उदय हुई । संवत् १९१७ में मथुरा में जगदगुरु स्वामी विरजानन्द के पावन एवं आध्यात्मिक संरक्षण में व्याकरण, पतंजलि योग सूत्र और वेद वेदांगों की शिक्षा ग्रहण की । तदनन्तर गुरू आज्ञानुसार वहीं से कृष्णन्तो विश्वमर्याम का व्रत लिया । इस व्रत के पूर्ण करने हेतु आपने संवत् १९३२ में बम्बई स्थित गिरगाँव में आर्य समाज की स्थापना की । किसी कवि ने अनेक व्रत को अपनी पंक्तियों में कहा कि-

''जिन्दगी को तपाये दे रहा हूँ,

स्वर्ण को कुन्दन बनाये दे रहा हूँ,

आँदियों को रोशनी मिलती रहेगी

आज वह दीपक जलाये दे रहा हूँ ॥

समाज सुधार - महर्षि व्यास के शब्दों में धर्म का मर्म यह है कि जो व्यवहार हमें अपने लिये स्वीकार नहीं, वह दूसरों के साथ न करें । परिवार की परस्पर कलह ने महाभारत जैसे विश्वयुद्ध का स्वरूप जब धारण किया तो असंख्य जीवन ही नष्ट-भ्रष्ट नहीं हे वरन उच्च आदर्श, मानवीय सिद्धान्त, जीवन मूल्य और धार्मिक मयादायें भी इस विकराल युद्ध की भेंट चढ़ गये । सत्य सनातन वैदिक धर्म के विनाश हो जाने के कारण विभिन्न प्रकार के मत-पंथ विश्व के विभिन्न क्षेत्रें में उदय हो गये । यथा ेद्ध, जैन, यहूदी, पारसी, इसाई और इस्लाम आदि । यद्यपि इन सभी मानवकृत, समसामयिक एवं वर्ग विशेष का हेतु चाहने वाले पंथों में वेदव्यास की धर्म-भावना का भाव कभी भूलकर किसी से न करो ऐसा सलूक । कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हें नागवार होता ॥ यत्र-तत्र प्रतिध्वनित होता है किन्तु गहराई में जाने पर सत्यसनातन वैदिक धर्म में पाई जाने वाली भावना इनमें सर्वत्र नहीं मिलती है ।

यहाँ एक तथ्य उल्लेखनीय है कि सभी नवोदित मतों-सम्प्रदायों ने मानवीय मूल्यों को गौण और अपने को प्रमुख बताया फलतः तटकालीन भारतीय समाज दिग्भ्रमित होकर वेदोक्त धर्म से परे हो गया । ऐसी परिस्थिति में समाज आस्तिक नास्तिक, शैव-वैष्णव, सगुण-निर्गुण शाकाहार-मांसाहार आदि खेमों में बंट गया । इन विषम परिस्थितियों के समाधान एवं धर्म और संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से महर्षि स्वामी दयानन्द ने अंधविश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों एवं जड़ताओं पर प्रबल प्रहार किया साथ ही इनके पोषक संगठनों एवं सम्प्रदायों की कड़ी आलोचना भी की ।

ऋषिवर दयानन्द ने आर्य समाज के पहिले दो नियमों में परमात्मा के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया अर्थात् प्रकाश डाला कि ईश्वर जगत् का आधार है । जगत् मिथ्या नहीं है बल्कि समस्त प्राणियों के लालन-पालन का ईश्वर विरचित मूल स्रोत है । स्वामी जी ने इन्हीं नियमों में स्पष्ट संकेत दिया कि ईश्वर सच्चिदानन्द है, प्राकृतिक नहीं है, निराकार है। ईश्वर अवतार नहीं लेता है । कोई जड़ पदार्थ ईश्वर अवतार हीं लेता है । कोई जड़ पदार्थ ईश्वर के स्थानापन्न नहीं हो सकते । इसलिये सब प्रकार की प्रतिमायें जो ईश्वर के रूप में पूज्य हैं, वे कल्पित और भ्रमात्मक हैं । आध्यात्मिक सिद्धान्तानुसार अनुचित और हानिकारक हैं । यजुर्वेद में भी इसी विचार का समर्थन एवं निर्देश है-

''अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भुयऽइव ते तो यऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भुयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याथंरताः ।।

न तस्य प्रतिमाऽस्ति स्वामी जी ने दशवें नियम में स्पष्ट लिखा है कि हमें उन्हीं कार्यों के करने न करने की स्वतन्त्रता है जिसका प्रभाव केवल कर्ता तक सीमित रहे । प्रकारान्तर से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करने वाले कार्यों में अपनी इच्छा को प्रधानता न देकर सामाजिक हित को ही सर्वोपरि समझना श्रेयस्कर है ।

महर्षि दयानन्द की सोच में उत्कृष्ट मानव धर्म वह है जो मानव-मानव के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न करते हुए सभी के लिये व्यक्तित्व विकास से लेकर जीवन में आगे बढ़ने के लिये समान अवसर प्रदान करने की पहिली विशेषता धारण करता हो । ऋषिवर की यह भावना ऋग्वेद के मन्त्र द्वारा पूर्णतः पुष्ट होती है- ''अज्येस्ठसो अकनिष्ठास एवं सं भ्रातरो वावृधः सौभगाय ।

महर्षि दयानन्द स्वयं लिखते हैं- ''सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जाएँ, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हो । लौह पुरुष सरदार पटेल का कल्याणकारी वचन उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द ने जिस अछूतोद्वार आन्दोलन को जन्‍ दिया उसी से प्रेरित एवं प्रभावित होकर श्रेद्धेय श्रद्धानन्‍ ने तिलक फण्ड में से कुछ धनराशि कॉग्रेस के अछूत द्वार कार्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रस्ताव पारित कराया जिसे सम्मानपूर्व महामना मालवीय जी एवं महात्मा गांधी जी ने अंगीकार किया था ।

चूँकि तत्कालीन भारतीय समाज में ब्राह्मणों एवं शूद्रों धरती में आकाश जैसा अन्तर था ऐसी स्थिति में सन्यासी दयानन्द ने अनुभव किया कि ऐसे जन्मना जातिगत, पंथगत भेदभाव के रहते राष्ट्रोन्नति सम्भव नहीं । इसके निवारण हेतु उन्होंने फिरोजपुर में सर्वप्रथम अनाथालय खोलकर असहाय, बेसहारा और जरूरतमन्द बच्चों के जीवन को सच्ची दिशा ही नहीं बल्कि उच्च चेतनामय जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर दिया । उन्होंने अथर्ववेद के इस मन्त्र की उच्चतम शिक्षा के भाव को जन-जन तक पहुँचाने संकल्प लिया-

प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु मां कृणं । प्रियं सर्वस्य प्रश्यत उत शूद्रे उतार्ये ।। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में स्वमन्तव्य लिखते हैं कि - ''चारों वर्ण परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख-दुःख हानि-लाभ में एकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन मन धन व्यय करते हैं । फलतः यजुर्वेद का सन्देश एवं उपदेश समाज में निशिचितरूपेण व्यवहृत होश अपरिवार्य है-

''ऊर्च नो घोहि ब्राह्मणेषु ऊचं राजसु नस्कृधि ।
ऊचं विश्येषश्रु शूद्रेषु मयि घेहिरूचा ऊयम् ।।

अर्थात ब्राह्मणों के साथ प्रीति हो, शूद्रों के साथ प्रीति हो मेरे हृदय में सबके प्रति प्रेम हो । स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया था कि हिन्दु समाज था जहाँ पानी बाहर तो निकलता था किन्तु एक बूंद अन्दर नही आ सकता था । ऋषिवर ने ऐसे सरोवर को शुल्क होने से बचा लिया अर्थात् लाखों मुस्लिम पाकिस्तान समर्थक होने से बच गये थे साथ ही स्वामी जीने ऐसे भाईयों को वैदिक धर्म में सादर आने तथा वेद विद्या पढ़ने-पढ़ाने का वेद सम्मत अधिकार प्रदान कर विश्व बन्धुत्व, सहअस्तित्व एवं एकत्व का कल्याणकारी सन्देश दिया ।

युग प्रवर्त दयानन्द समस्त पृथ्वी को एक परिवार की तरह मानकर परस्पर प्रेम पूर्वक रहने की वैदिक शिक्षा को हृदय से अनिवार्य मानते थे । अथर्ववेद के मंत्र नं बिम्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माण पृथिवी यथोकसम् । अर्थात् बहुत भाषाओं को बोलने वाले, अनेक प्रकार के धर्मों (कर्मों) का पालन करने वाले लोगों को पृथ्वी माता अपने अन्दर ऐसे आश्रम देकर रखती है जैसे एक परिवार के लोग मिलजुलकर रहते है की उदात्त भावना को महर्षि जनजन तक पहुँचाने को अहर्निश दृढ़ संकल्प थे ।

पृथ्वी की अप्रतिम संरचना मातृशक्ति उस काल में घोर अवमानना एवं उपेक्षा का जीवन यापन कर रही थी । शंकराचार्य ने स्त्री शूद्रोनाधीयातम् एवं गोस्वामी तुलसीदास ने ढोलगंवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी की घोषणा की थी । स्वामी दयानन्द ने अपने तप से सम्पूर्ण समाज को नारी शक्ति के वैदिक स्वरूप को ऋग्वेद के मंत्र से समझाया-

अहं केतु रहं मूर्धाह मुग्रा विवाचनी ।
ममेद्घु क्रतुं पति सेहानाया उपाचरेत् ।।

अर्थात् मैं श्वजा के तुल्य हूँ । मैं समाज में मूर्धा स्थान पर केन्द्रित हूँ । मैं तेजवन्ती एवं तपोवन्ती बनकर सबाओं में हितोपदेश करने वाली हूँ । मेरे आदर्शो, मेरी इच्छाओं, साधना एवं कर्म के अनुकूल मुझे प्रति प्राप्त हो । स्वामी जी न अपने सत्योप देशों के माध्यम से नारियों में उत्तम शिक्षा, साहस, वीरता और बलिदान की भावना को जगाया । इसीलिये आज भी स्वामी दयानन्द प्रथम नारी उद्धारक के रूप में अभिनन्दनीय है । उनकी दृढ़ मान्यता थी कि नारी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पुर्नजीवित करने के लिये उनके मध्य वैदिक शिक्षा का विकास आवश्यक हो । स्वामी जी अपने स्वप्नों के आर्यावर्त में भारी के लिये ऐसी शिक्षा चाहते थे जो नारी को गृहकार्यकुशलता के साथ-साथ सामाजिक जीवन स्थिरल, दृढ़ता एवं स्वावलम्बन प्रदान कर सके । यजुर्वेद में एतद्विषयक विचारों का प्रबल समर्थन दृष्टव्य है-

''घ्रुवासिघरूणास्तृता विश्वकर्मणा'' अर्थात हे नारी !

तू ध्रुव हो अटल निर्णयों वाली हो । ताकि तू पूर्ण सुरक्षा एवं सम्मानपूर्वक जीवन जी सके ।

संक्षेप में महर्षि दयानन्द समाज में समर्थक थे जो समानता, वैश्विक मात्र-भाव, सर्वांगीण विकास एवं वैज्ञानिक आधार मूलक हो । राजर्षि रणजय सिंह महाराज द्वारा रचित छन्द महर्षि के जीवन पर प्रेरक प्रभाव डालता है ।

''स्वामी दयानन्द ने दिखाया जो वेद पथ
उसी पर चलेंगे तो सच्ची शान्ति पायेंगे ।
दीन, विधवा, अनाथ गोवंश संरक्षण में
तन-मन-धन सभी अपना लूटायेंगे ।
भूलकर भारतीय सभ्यता प्राचीन कभी,
चीन और रूस के न व्यर्थ गीत गायेंगे,
दूरित को दूर कर वैदिक पताका लिये,
विश्व में रणजय आर्य धर्म फैलायेंगे ।।

मोक्ष के साधन

- स्वामीरामनन्द सरस्वती

मोक्ष प्राप्त करने के लिये यह भी बहुत आवश्यक है कि हमें यह ज्ञान हो कि मोक्ष क्या है और उसके साधन क्यो है ?

मोक्ष क्या है ?

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में लिखते हैं

'मुंचन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्ति'

जिसमें छूट जाना हो उस का नाम मुक्ति है। अर्थात् दुःख से छूट र सुख को प्राप्त होने को मुक्ति कहते हैं। महर्षि गौतम ने न्याय दर्शन में अध्याय १.१.२१ में कहा है **'बाधना लक्षणं दुखम'** अर्थात् बाधा, ताप, दुःख, पीड़ा सब पर्यायवाची हैं और यही दुख के लक्षण है। जिस पदार्थ के सम्बन्ध में मन में यह इच्छा या ऐसा विचार हो कि यह मुझे प्राप्त न हो उसे दुःख कहते हैं और फिर १.१.२२ में मोक्ष को परिभाषित किया

''तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।''

यानी उस दुःख के अत्यन्त अभाव को अथवा निवृत्त हो जाने को मोक्ष कहते हैं। तैत्रियः उपनिषद् में भी आता है -

'सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्मयोवेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।

सोऽश्नुते सर्वान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति'॥

जैसे आकाश अनादि सत्य और सर्वत्र व्यापक है, वैसे ही ईश्वर भी अनादि, सत् और सर्वत्र विद्यमान है। वह अत्यन्त ज्ञानस्वरूप और आनन्दस्वरूप भी है। वह सर्वव्यापक होने के कारण सवके हृदय रुपी गुफा में भी विराजमान है। जो मनुष्य ऐसा जानता है, उसकी सब कामनाएं पूर्ण हो जाती है और वह ब्रह्म के साथ सदा आनन्द में रहता है। सांख्य दर्शन का पहला सूत्र भी कहता है- **'अथ त्रिविध दुखात् अत्यंत निवृत्ती अत्यंत पुरुषार्थ'** अर्थात् अध्यात्मिक, आदिदैविक और आदिभौतिक- तीनों प्रकार के दुखों से छूट कर मुक्ति पाना ही परम पुरुषार्थ है। महर्षि पतंजलि जी महाराज ने भी चौथे पाद के अंतिम सूत्र ३४ में भी यही सन्देश दिया है और कहा है -

'पुरुशार्थ शून्यानांः गुणानाम् प्रतिप्रसवः कैवल्यं, स्वरुप प्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरित' अर्थात् जब प्रकृति के तीनों गुण-सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण- अपना कार्य समाप्त कर अपने कारण यानी मूल प्रकृति में लीन हो जाते हैं और आगे उनका कार्य करना बंद हो जाता है तब चित्ति शक्ति अर्थात् चेतन आत्मा अपने स्वरूप और परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानकर अपने और परमात्मा के स्वरूप में स्थित हो जाता है और सब दुखों से छूट कर कैवल्य प्राप्त कर लेता है।

संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि सभी ऋषि, मुनि, योगी और तपस्वी आदियों ने सब दुखों से छूट जाने को परमपुरुषार्थ मोक्ष कहा है और ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होगा जो दुखों से छूटना नहीं चाहता होगा। इन्द्रियों के भोग तो पशु योनी में भी भोगे जा सकते हैं, परन्तु मोक्ष केवल मनुष्य योनी में ही प्राप्त किया जा सकता है। अतः यह सभी का परम कर्त्तव्य है कि मोक्ष के साधनों का ज्ञान प्राप्त कर उन्हें अपने जीवन में धारण करें।

सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द जी ने मोक्ष के निम्नलिखित साधन लिखे हैं :-

१) विवेक
२) वैराग्य
३) शटक सम्पत्ति
४) मुमुक्षुत्व

सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् नित्य-अनित्य, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का निश्चय करें। नित्य पदार्थ केवल तीन हैं- (१) ईश्वर, (२) जीव और (३) मूल प्रकृति।

मूल प्रकृति में विकृति से बना हुआ समस्त जग और पदार्थ अनित्य हैं। जो पदार्थ जैसा है और जिसके जो गुण कर्म स्वभाव हैं वैसा ही जानना, वैसा ही मानना, वैसा ही बोलना और जीवन में धारण करना सत्य और इसके विपरीत असत्य होता है। जिस काम के करने में भय, शंका और लज्जा आये वह-अधर्म और अकर्त्तव्य और जिसके करने में अभय, निःशक्ता, प्रसन्नता और उत्साह हो वह धर्म और कर्त्तव्य होता है। जो मनुष्य विवेकी नहीं होता और नित्य-अनित्य एवं सत्य-असत्य के भेद को नहीं समझता, वह अविद्या से ग्रस्त हो जाता है और अन्धकार में फस जाता है।

पञ्चकोशों का वर्णन

विवेक के अन्तर्गत पांच कोशों का ज्ञान भी करना चाहिए। पहला कोश अननमय कोश है जो त्वचा से लेकर अस्थि पर्यन्त का समूह और पृथ्वीमय है। दूसरा प्राणमय कोश है जिसमें प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान कार्य करते हैं। तीसरा मनोमय कोश है जिसमें मन और अंहकार के साथ पांच कर्म इन्द्रियाँ है। चौथा विज्ञानमय कोश है जिसमें बुद्धि और चित्त के साथ पञ्च ज्ञान इन्द्रियाँ शामिल हैं। पांचवा आनन्दमय कोश जिसमें प्रीति, प्रसन्नता आनंद और आधार कारण रुप प्रकृति है। इन्ही से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञान आदि व्यवहारों को करता है।

तीन अवस्था और स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर

इसके साथ ही तीन अवस्थाओं के सम्बन्ध में भी ज्ञान होना चाहिए। वे यह है- जागृत, स्वप्न और तीसरी सुषुप्ति। तीन शरीर हैं- पहला स्थूल, दूसरा सूक्ष्म और तीसरा कारण।

स्थूल शरीर, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच भूतों से बना है जो दिखाई देता है। इसी से सुख-दुख भोगे जाते हैं। यही पैदा होता है, बढ़ता है, एक सीमा तक बढ़कर रुक जाता है, फिर घटता है रोगी होकर अन्त में नाश को प्राप्त होता है।

सूक्ष्म शरी- स्थूल शरीर में एक सूक्ष्म शरीर है जो जन्म-जन्मांतरों से जब तक आत्मा का मोक्ष नहीं हो जाता आत्मा के साथ चिपटा रहता है। इसी शरीर में जन्म-जन्म के संस्कार चित्त के माध्यम से इकट्ठे रहते हैं। योगी लोग इसी शरीर के द्वारा पिछले जन्मों की बात ध्यान के माध्यम से जान लेते है। पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन १७ तत्वों का बना हुआ है। कई विद्वान अहंकार को भी सूक्ष्म शरीर का अंग मानते हैं और १८ तत्वों का समूह कहते हैं।

तीसरा कारण शरीर जिस में गाढ़ निद्रा होती है और प्रकृति रुप होने से विभु और सब जीव के लिए एक है। चौथा तुरिय-शरीर वह है जिसमें समाधि से जीव परमात्मा के आनन्द में मग्न होते हैं।

महर्षि ने आगे यह भी लिखा है कि इन सब कोशों और अवस्थाओं से जीव अलग है और वही सब का प्रेरक, सब का धर्ता, साक्षीकर्ता, भोक्ता कहलाता है। जो कोई

ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता भोक्ता नहीं तो जानो वह अविवेकी और अज्ञानी हैं क्योंकि बिना जीव के यह जो जड़ पदार्थ हैं इन को सुख दुःख का भोग व पाप पुण्य करना कभी नहीं हो सकता । हाँ इनके सम्बन्ध से जीव पाप पुण्य का कर्ता और सुख-दुखों का भोक्ता है ।

दूसरा साध वैराग्य

मोक्ष प्राप्ति का दूसरा साधन वैराग है । महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में और भगवान् कृष्ण ने गीता में चित्त की वृत्तियों को रोकने के लिए अभ्यास और वैराग्य दो साधन बताये हैं । वैराग्य का अर्थ है कि मन से लोक और परलोक के सभी सुखों और पदार्थों की इच्छा व तृष्णा का परित्याग करना । मन में यदि संसार की किसी वस्तु के लिए राग बना हुआ है और केवल बाह्य रुप से उसका त्याग किया हुआ है तो व वास्तविक वैराग्य नहीं है । असली वैराग्य है रोग रहित और तृष्णा रहित होना । महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन के प्रथम पाद के १५ वे सूत्र में वैराग्य का लक्षण लिखा है **''दृष्ट अनुश्रविक विषय वितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम ।''** अर्थात् किसी भी देखे हुए और सुने हुए रुप, रस, गन्ध आदि विषयों में तृष्णा का न होने की संज्ञा का नाम वैराग्य है । ऐसे वैराग्य को भी महर्षि ने 'अपर' वैराग्य की कोटि में रखा है और इससे सम्प्रज्ञात समाधि की सिद्ध होती है । इस से भी ऊँचा 'पर' वैराग्य है जिससे असम्प्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होती है और उसको १६ वें सूत्र में इस प्रकार बताया है-

''तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्णयइ्'

अर्थात् आत्मा का ज्ञान हो जाने पर प्रकृति के तीनों गुणो- सत, रज, और तम-से तृष्णा रहित हो जाना पर वैराग्य है ।

जगत गुरु शंकराचार्य ने विवेक चूड़ामनी में यह जानने के लिए कि वैराग्य हो गया है या नहीं यह पहचान बताई है कि जब भोग्य वस्तुओं में वासना उत्पन्न न हो तब समझ लेना चाहिए कि वाराग्य की भावना बह रही है । महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन के चौथे अध्याय के सूत्र २८ जो इस प्रकार है- **''दोषद्रशनातुभयो...''** में भी बहुत उपयोगी साधन वैराग्य उत्पन्न करने के लिए बताया है । इस का अर्थ आत्मा और प्राकृतिक विषय जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि हैं दोनों के दोषों के चिन्तन-मनन से भी वैराग्य की भावना जागृत होती है । आत्मा सम्बन्धित दोष है कि पवित्र होते हुए भी आत्मा प्रकृति के संयोग से गर्भ आदि नाना प्रकार के कष्टों में फंस जाता है । जब चित्त में इस प्रकार की भावना उदित होती है कि मैं तो नित्य, शुद्ध, पवित्र औ निर्मल हूँ फिर क्यों यह दुःख होता है उसका चित्त वैराग्य की ओर नमनगामी हो जाता है । विषय सम्बन्धित दोष यह है कि प्रकृति के सारे कार्य परिणामी हैं- आज हैं कल नहीं रहेंगे-और फिर यह भी सर्वदा सम्भव नहीं है कि विषयों से होने वाले सुख तथा उसके साधन सर्वत्र, सदा मिलते रहेंगे । यह भावना आ जाती है कि इन के पीछे कब तक और कहाँ तक भागा जाये ? इस से अच्छा तो यही है कि इन में राग हो न रहे ।

तीसरा साधन - षटक सम्पत्ति

तीसरा साधन छः प्रकार के कर्म करना- एक 'शम' जिससे अपने आत्मा और अंतःकरण को अधर्म आचरण से हटा कर धर्म आचरण में लगाना । दूसरा है 'दम' जिसका अभिप्राय है कि चक्षु नाक, कान आदि इन्द्रियों को अपने वश में रखना और उन्हें बुरे जाने से रोक कर शुभ कर्मो में लगाना । तीसरा है 'उपरति' अर्थात् दुष्टों से जो बुरे कर्मो को करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, उनकी सदा उपेक्षा और अवहेलना करना । चौथा 'तितिक्षा' - अर्थात् हानि लाभ, सुख-दुख, मान-अपमान, गर्मी सर्दी आदि में सम रहना और अपने मन के संतुलन को बनाये रख कर मुक्ति देने वाले कर्मों में ही लगे रहना । पांचवा है' श्रद्ध जिस का तात्पर्य है ईश्वर, वेद और ऋषि-मुनियों के वचन और आप्त पुरुषों के शब्द में पूर्ण विश्वास करना । सत्य को अर्थात् जो पदार्थ जैसा है और जिस के जैसे गुण, कर्म और स्वभाव है, उसको वैसा ही मानना और मन में धारण करना श्रद्धा है । वेद में श्रद्धा की बड़ी महिमा गाई है । ऋग्वेद का मन्त्र सं० १०/१४१/४ **'श्रद्धा देवा जयमाना वायुगोपा उपासते । श्रद्धा हृदयय्याकूत्या श्रद्धा विन्दते वसु ।।'** - बताता है कि विद्वान महात्मा, यज्ञ करने-कराने वाले और प्राण वायु भक्षण करने वाले श्रद्धा के आधार पर ही किया करते हैं । यजु-वेद में तो यहां तक उपदेश दिया है कि श्रद्धा से ही सत्य अर्थात् ईश्वर को प्राप्त किया जाता है ।

इस सम्बन्ध में अध्याय १९ मन्त्र ३० बहुत

क्रमशः पृ.११पर

(శేషము పేజి 11)

యింత ప్రభావం చూపిస్తే మానవ శరీరంమీద మరెంతో ప్రభావం చూపించగలదని ఆ తత్వవేత్త అన్నారు. దీనిని బట్టి గాయత్రీ మంత్ర మెంత శక్తివంతమైనదో మీరు అంచనా వేయవచ్చు. గాయత్రీ మహిమను గురించి ఎంత చెప్పినా తక్కువే" అన్నారు.

ఆయుర్వేద విద్వాంసులును గాయత్రీ మహిమను గుర్తించారు. ఆయుర్వేదంలో చరకసంహిత ఒక మహాగ్రంథం. దానిలో ఆ ఋషి ఈ విధంగా వ్రాశారు. "లోకం, ప్రజలూ నేను వ్రాసిన ఔషధయోగాలను విశ్వసిస్తున్నారు. అట్లే, నా యీ మాటలను కూడా విశ్వసించాలి. ఒక వ్యక్తి ఒక సంవత్సరం బ్రహ్మచర్యాన్ని పాటిస్తూ, ఆవులను మేపుకుంటూ, గాయత్రీజపం చేస్తూ ఆవుపాలు త్రాగుతూ సంవత్సరం పూర్తవుతుంద నగా ముందు మూడు దినములు ఉపవాసం చెయ్యాలి. వీలైనంత ఎక్కువగా గాయత్రీ జపం చెయ్యాలి. ఉపవాసం తరువాత ఉసిరిక చెట్టునెక్కి ఎన్ని ఉసిరికలు (పెద్ద ఉసరికాయలు) తినగలిగితే అన్ని ఉసిరికలు తినాలి. ఎన్ని తింటాడో అన్ని సంవత్సరాలు అతని ఆయువు పెరుగుతుంది. ఈ విధంగా కాయకల్పవిధానం (చికిత్స) తెలుపుచున్నా"నని వ్రాశారు. ఇది ఒక అద్భుతమైన చికిత్స. చరిత్రను పరిశీలిస్తే కొందరు ఈ కాయకల్ప విధానాన్నసరించి అద్భుతమైన లాభాలను పొందారు. వారిని చూసి ఆధునిక వైద్యులు ఆశ్చర్యపోయారు. వివరాలకు మా ప్రచురణ **'వేదాలలో అశ్వినీదేవతలు'** అనే పుస్తకం చదువగోరు చున్నాము.

కాయకల్ప చికిత్సలో భౌతిక స్థూల శరీరంతోబాటు సూక్ష్మ కారణ శరీరాలు కూడా చికిత్సించబడతాయి. అందుకు అర్థభావనతో గూడిన గాయత్రీజపం ఎంతగానో ఉపకరి స్తుంది. ఇది ప్రాణశక్తులను బలపరుస్తుంది. దీర్ఘజీవనాన్ని ప్రసాదిస్తుంది.

ముందుగా మనం గాయత్రీ మంత్ర పదములలోని విశేషార్థాన్ని తెలుసుకొని అనంతరం మరికొన్ని విశేషాలను, విశిష్టతలను తెలిసికొందాము.

कैसा हो व्यवहार हमारा

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वर्तमान काल के भौतिकतावादी युग में जब मनुष्य तथाकथित विकास की अंधी दौड़ की आपाधापी नें बड़ी तीव्र गति आध्यात्म के शिखर से लुढ़कता अधोगति की तरफ पिशलता जा रहा है । ऐसे में कैसे दूसरे की टांग खींचकर आगे निकल पाउं इसी दौड़ में एक दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो इसे पूरी तरह भूल चुका है । यदि स्पष्ट रूप से कहें तो आज के मनुष्य का आपसी व्यवहार भी व्यापार बन चुका है । यदि किसी को किसी से कुछ निजी स्वार्थ का काम है तो उसका व्यवहार एकदम चासनी की भांति मीठा हो जाता है । औ यदि कोई काम नहीं है तो व्यवहार रुखा-सूखा कर्क । इसी स्वार्थ आधारित व्यवहार ने रिश्तों को भी स्वार्थी बना दिया है और मतलब की दुनिया में मतलब के रिश्ते रह गए है । बाप बड़ा ना भैया बस सबसे बड़ा रूपैया ।

लेकिन प्रश्न उठता है कि हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति कैसा हो हमें औरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए । महर्षि देव दयानन्द ने आर्य समाज के सातवे नियम में इस बारे बहुत स्पष्ट निर्देश दिया है । "हमें सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए" अर्थात एक व्यक्ति के दूसरे से व्यवहार के लिए तीन अनिवार्य सावधामियां देव दयानन्द ने बताई प्रथम प्रीतिपूर्वक दूसरा धर्मानुसार तीसरा यथायोग्य । अब तीन अनिवार्य भातों को व्यवहारकुशल बनने के लिए विस्तार से समझना आवश्यक है । वेसे भी आज की दौड़ती भागती जिंदगी में हमने हर शब्द का अपने स्वार्थ के अनुरूप संकुचित रूढ़ि अर्थ करके अनर्थ कर दिया है । इसलिए प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तने का विस्तृत यौगिक अर्थ समझना आचरण में उतारने के लिए आवश्यक हो जाता है ।

प्रीति वा प्रेम का सर्वाधिक दुरुपयोग वर्तमान काल में हो रहा है । प्रेम वा प्रीति के यौगिक अर्थ को संकुचित करते करते हमने इसे विपरीत लिंगों के वासनात्मक आकर्षण तक सीमित कर दिया है । जबकि प्रेम का तो बहुत विस्तृत अर्थ है गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, मां-बेटे, पिता-पुत्री, मां-बेटी, भाई-बहन जैसे प्रगाढ़ संबंधों में प्रेम या प्रीति इन रिश्तों के अटूट बंधन के लिए आवश्यक है । प्रेम की अनुपम परिभाषा अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के ३०वें सूक्त के पहले मंत्र में दी है ।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।।

अर्थात एक मनुष्य अन्यम् दूसरे मनुष्य के साथ अभिहर्यत ऐसा व्यवहार करे इस जैसे अघ्न्या गाय जातम् नवजात वत्सम् बछड़े के साथ करती है । प्रेम व प्रीति का इससे अधिक सुंदर उदाहरण शायद कहीं भी देखने को नहीं मिलता । गाय अपनी जीभ से अपने नवजात बछड़े के शरीर से मल छुड़ा कर उसे साफ कर देती है और फिर साफ करने के बाद मलमुक्त करके अपना दुग्धपान करवाती है । इससे सुंदर इससे बड़ा और व्यापक प्रेम को उदाहरण भला और क्या हो सकता है । इससे स्पष्ट निर्देश मिलता है कि प्रीतिपूर्वक व्यवहार में हमें दूसरों के दोष छुड़वाकर उनमें सदगुण भरने हैं यही है दूसरों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार ना कि किसी शाराबी के साथ बैठकर शाराब के जाम लगाना अपितु शाराब छुडवाकर अमृत की भांति दुग्धपान करवाना प्रीति या प्रेम पूर्वक व्यवहार की श्रेणी में आता है ।

धर्मानुसार व्यवहार में कैसे हमारा आचरण दूसरों के प्रति धर्मानुकूल हो यह जानना अत्यंत आवश्यक है तो इसके लिए सरलतम उपाय है कि जैसा व्यवहार हम अपने जीवन में दूसरों से अपने लिए अपेक्षित करते हैं वैसा ही व्यवहार हम स्वयं उस स्थिति में दूसरों के साथ किया करें । महर्षि देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए स्वआत्मवत व्यवहार को मनुष्य के लिए अनिवार्य गुणों में रखा है । जैसा हम अपने जीवन में दूसरों से व्यवहार चाहते है यदि वैसा दूसरों के साथ करे तो व्यवहार संबंधी कोई समस्या पैदा नहीं होती । अपने कार्यालय में बैठकर अपने पद की भक्तियों का उपयोग करते समय यदि सामने फाइल लेकर खड़े व्यक्ति के साथ व्यवहार करने से पूर्व यदि एक पल के लिए हम स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा करके सोचें और फिर जैसा व्यवहार उस स्थिति में हम अपने लिए अपेक्षित करते हों वैसा व्यवहार हम उस समय सामने खड़े व्यक्ति के साथ करें । यदि स्वआत्मवत व्यवहार के धर्मानुसार आचरण को हम अपनी जीवन शैली बना लें तो निश्चित रूप से जीवन में अपने व्यवहार के कारण सफल हो सकते हैं ।

यथायोग्य व्यवहार स्वआत्मवत व्यवहार का विस्तार है अर्थात जैसा जिस के लिए अपेक्षित वा योग्य हो । यह अंग्रेजी के टिट फॉर टैट जैसे को तैसा से भिन्न है । इसमें क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं आती अपितु जो जैसा है उसको वैसा योग्य उचित व्यवहार आता है । अर्थात दोषी अपराधी को उचित दंड और निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण सत्कार इसी यथायोग्य व्यवहार की श्रेणी में आता है । इस प्रकार यदि हम सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करेंगे तो निश्चित रूप से जीवन में सफलता के सोपान चढ़कर अपने, लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे ।

शेष पृ.१६ से....

महत्वपूर्ण है जो इस प्रकारर है- **"व्रतेन दीक्षामाप्रोति दीक्षयाप्रोति दक्षिणां । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते"** - अर्थात् व्रत का अनुपालन करने से मनुष्य को योग्यता प्राप्त होती है । योग्यता से आदर प्राप्त होता है । जिसके फलस्वरुप सत्य पर श्रद्धा और विश्वास पैदा होता है । श्रद्धा से मनुष्य सत्य को पा लेता है । महर्षि वेद व्यास जी कहते हैं कि जैसे माँ शिशु की रक्षा करती है, उसी भांति श्रद्धा माँ साधक की रक्षा करती है । छटी सम्पत्ति है 'समाधान' जब तक सारे सशय और भ्रान्ति दूर नहीं हो जाती तब तक कोई भी मनुष्य न तो किसी भी वस्तु को पूरे मन से त्याग करने और न ही ग्रहण करने कि लिए तैयार होगा । जब तक सन्देह रहेगा तब तक पक्ष और विपक्ष में प्रश्न उठते ही रहेंगे । परन्तु जब कोई भी शंका शेष नहीं रह जाती तब चित्त का समाधान हो जाता है । महर्षि दयानंद जी लिखते हैं कि चित की एकाग्रता 'समाधान' जो छटी सम्पत्ति है ।

चौथा साधन है मुमुक्षुत्व । इसका तात्पर्य है कि जैसे भूखे को भोजन और प्यासे को जल के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार मुक्ति और मुक्ति के साधन के इलावा कुछ भी अच्छा नहीं लगना और वही ब से अधिक प्रिय लगना ।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् रत्न धातमम्।। १,१,१।।

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ।

वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०७४, तदनुसार २४ जुलाई २०१७ सोमवार से २१ अगस्त २०१७ सोमवार तक बड़े समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदे जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए।

१. श्रावणी-पर्व ७-८-२०१७ सोमवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो ।

२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानो सहित ८-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४१) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो।

३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।

४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।

५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पड़ोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक -से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करे।

सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।

रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानो में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नही तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर मे यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करे। साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अड़ोस-पड़ोस के लोगो में वैदिक वातावरण का निर्माण हो।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्येति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनो संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढ़े ऋण-बन्धनों को तोड़ने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उतारना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहकबनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्ववानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करे।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

भवदीय

विट्ठलराव आर्य, एम.एससी. एल.एल.बी.,मंत्री सभा   हरिकिशन वेदालंकार,संयोजक   ठा. लक्ष्मण सिंह प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र-तेलंगाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दि. ७ अगस्त २०१७ सोमवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणें की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार सोमवार दिनांक ७ अगस्त २०१७ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्य में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ । उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रबन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१. ओ३म् ऋ तावान् ऋ तजाता ऋ कोवृधो घोरासो अनृतद्विष। तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमे नमः स्याम वे च सुरयः।। ऋग्वेद ७,६६,१३

२. ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपध्नन्तो अराह्णः।। ऋग्वेद १,६३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलह्मतः स्याम ।। ऋग्वेद १,६३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मंत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें । जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृध्दि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें ।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें । आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें ।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्मा बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजली

श्रध्दांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान ।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान ।।
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने ।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने ।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीष झुकाते हैं ।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं ।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से ।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से ।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर ।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर ।।
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं ।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत धरते हैं ।।
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने ।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें ।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी, रामाजी श्री परमानन्द ।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द ।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश ।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश ।।
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव ।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव ।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र ।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द ।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह ।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह ।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का ।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का ।।

भवदीय

विट्ठलराव आर्य, एम.एससी. एल.एल.बी., मंत्री सभा — हरिकिशन वेदालंकार, संयोजक — ठा. लक्ष्मण सिंह, प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र-तेलंगाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

-: ओ३म् :-

निमंत्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना के तत्वावधान में
आर्य समाज बलकमपेट के सौजन्य से
नगर द्वय की आर्य समाजों का

सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं
हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दिनांक **07** अगस्त **2017** सोमवार को प्रातः **8.30** बजे से
वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल उमानगर, कुंदनबाग, बेगमपेट,
हैदराबाद में आयोजित है ।

-: कार्यक्रम :-

नूतन यज्ञोपवीत धारण, श्रावणी उपाकर्म - पर्वयज्ञ

ब्रह्मा	: **डॉ. वसुधा शास्त्री, आचार्य अरविन्द शास्त्री जी**
भजन	: **पं. प्रियदत्त शास्त्री जी**
वेदोपदेश	: **आचार्य भवभूति जी** **आचार्या नीरजा जी**
अध्यक्षता	: **श्री ठा. लक्ष्मण सिंह जी** प्रधान - आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाणा
मुख्य अतिथि	: **श्री बण्डारू दत्तात्रेय जी** केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार
मंच संचालन	: **श्री हरिकिशन वेदालंकार जी** उपप्रधान - आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाणा

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के बलिदानियों के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाएगी ।

सभी आर्य बन्धु - सपरिवार अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफ़ल बनाएं ।

भवदीय

प्रो. विट्ठलराव आर्य — मंत्री सभा एवं महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली
हरिकिशन वेदालंकार — संयोजक
सी.हेच. रविकिरण — प्रधान
श्रीमती के.एन.परमेश्वरी — मंत्री
आर्य समाज बलकमपेट, हैदराबाद

॥ ఓం ॥

ఆహ్వానము

ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో
ఆర్యసమాజం బల్‌కమ్‌పేట్, హైదరాబాద్ వారి సౌజన్యంతో
జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు
హైదరాబాద్ ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది : 07 ఆగష్టు 2017 సోమవారము ఉదయం గం॥ 8-30 ని॥ల నుండి వైదిక ఆశ్రం కన్యా గురుకుల్, ఉమానగర్, కుందన్‌బాగ్, బేగంపేట్, హైదరాబాద్‌లో నిర్వహించబడును.

కార్యక్రమము

యజ్ఞోపవీత ధారణ, శ్రావణి ఉపాకర్మ, పర్వయజ్ఞము

యజ్ఞ బ్రహ్మ	: **డా॥ వసుధ శాస్త్రి, ఆచార్య అరవింద్ శాస్త్రి గార్లు**
భజనలు	: **పండిత్ ప్రియదత్ శాస్త్రి గారు**
వేదోపదేశకులు	: **ఆచార్య భవభూతి గారు** **ఆచార్యా నీరజ గారు**
అధ్యక్షత	: **గౌ॥ శ్రీ ఠాకూర్ లక్ష్మణ్ సింగ్ గారు** అధ్యక్షులు ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ
ముఖ్య అతిథి	: **గౌ॥ శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారు** కేంద్ర మంత్రి భారత ప్రభుత్వము
కార్యక్రమ నిర్వహణ	: **శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు** ఉపాధ్యక్షులు ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

హైదారాబాదు ఆర్య సత్యాగ్రహంలో అమరులైన ఆర్య వీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటింపబడును.

ఆర్య బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతముగా సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము. అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరు.

భవదీయులు

ప్రొ॥ విఠల్‌రావు ఆర్య — సభ కార్యదర్శి మరియు ప్రధాన కార్యదర్శి సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ, న్యూ ఢిల్లీ
హరికిషన్ వేదాలంకార్ — సంయోజకులు
సి.హెచ్. రవికిరణ్ — అధ్యక్షులు
శ్రీమతి కె.ఎన్.పరమేశ్వరి — కార్యదర్శి
ఆర్యసమాజము బల్‌కమ్‌పేట్, హైదరాబాద్

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-08-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, మంత్రి సభ.

To,

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम

क्र.सं.	आर्य समाजों के नाम	दिनांक	विद्वानों के नाम
1.	चौदरगुडा	11,12,13 अगस्त	आचार्य विश्वश्रवा जी
2.	नारायणपेट	17,18,19 अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्री जी
3.	उटकूर	12,13,14 अगस्त	
4.	जडचर्ला	4,5,6 अगस्त	पं. के.वी. रेड्डी जी मर्री कृष्णा रेड्डी जी
5.	महबूबनगर	20,21,22 अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्री जी
6.	मकथल	13,14 अगस्त	पं. रामचरण जी
7.	निज़ामाबाद	7 से 13 अगस्त	स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी
8.	बिचकुन्दा	18 से 14 अगस्त	आचार्य विश्वश्रवा जी श्रीमती धर्मवती जी
9.	कामारेड्डी	24 जुलाई से 7 अगस्त	आचार्य वेदमित्र जी
10.	बोधन	17,18,19 अगस्त	
11.	नलगोंडा	18,19,20 अगस्त	
12.	मिरियाल गुडा	30, 31 जुलाई	पं. हरिकिशन जी वेदालंकार
13.	जहीराबाद	14 से 20 अगस्त	आचार्य ओम प्रकाश जी नारायण दास जी
14.	ताण्डूर	18,19,20 अगस्त	
15.	चंगीचर्ला	21 जुलाई से 6 अगस्त	आचार्य विश्वश्रवा जी आचार्य प्रद्युम्न जी
16.	लालागुडा	4,5,6 अगस्त	पं. सुशील कुमार जी आचार्या सविता जी
17.	उम्दाबाज़ार	13 से 15 अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्री जी
18.	रहीमपुरा	17,18,19 अगस्त	ठा. लक्ष्मण सिंह जी
19.	धूलपेट	9 से 15 अगस्त	ठा. लक्ष्मण सिंह जी
20.	दयालबौली	12,13,14 अगस्त	अशोक कुमार श्रीवास्तव जी
21.	वरंगल	4,5,6,7 अगस्त	पं. चलवादि सोमय्या जी

Ph : 040-66758707, 24756983, 24753827, 23400363, Mobile : 9989909530, 93933020261.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.